रणमल्ल-छंद

सं. मूलचंद 'प्राणेश'

रणमल्ल छंद

सम्पादक

मूलचंद 'प्राणेश'

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर

❖ प्रकाशक :
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

❖ © लेखक

❖ द्वितीय संशोधित संस्करण : 2013

❖ मूल्य : पिचहत्तर रुपये मात्र (₹ 75.00)

राजस्थानी ग्रन्थागार के लिए कम्पोंजिंग रोहन कम्प्यूटर्स एवं नागणेचियां ऑफसेट द्वारा मुद्रित

Ranmall Chhand

Author : **Moolchand 'Pranesh'**
Published by : **Rajasthani Granthagar**, Jodhpur ✆ 0291-2623933
Second Revised Edition : 2013 • Price : ₹ 75.00

आभार

भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला का सातवां पुष्प रणमल्ल छंद, अध्येताओं व पाठकों की सेवा में सहर्ष प्रस्तुत है। इससे पूर्व भी राजस्थान के शिक्षा-विभाग व अनेक साहित्यानुरागियों के सहयोग से प्रकाशित ग्रन्थ जिस प्रकार साहित्य-जगत में समादृत हुए हैं, आशा है, वैसे ही प्रस्तुत ग्रंथ भी स्वीकार किया जायगा।

"रणमल्ल छंद" के ऐतिहासिक, साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक व भाषा-वैज्ञानिक अधययन की महती आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। प्रसन्नता का विषय है कि इस प्रकार का प्रथम सर्वांगीण अध्ययन 'प्रतिष्ठान' के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर

मूलचन्द पारीक
व्यवस्था-सचिव

अनुक्रमणिका

- आभार
  -मूलचन्द पारीक 3
- दो शब्द
  -सत्यनाराण पारीक 5
- प्रस्तावना
  -डॉ. रघुवीरसिंह, सीतामऊ 7
- भूमिका 15-48
- मूल पाठ, पाठ-भेद और भावार्थ 49-70
- शब्द कोष 71-77

दो शब्द

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' के संबंध में सर्वप्रथम गुजराती में स्वर्गीय रा.ब. केशवलाल ह० ध्रुव और कन्हैयालाल मा० मुंशी ने प्रकाश डाला है। इस काव्य के साहित्यिक-सौष्ठव पर जितना अध्ययन अपेक्षित था, वह तब नहीं हो पाया। विश्वविद्यालय स्तर पर राजस्थानी भाषा व साहित्य विषयक शोध-संभावनाएं अत्यन्त विस्तृत हो गई हैं। इसी संभावना की परिपूर्ति की दृष्टि से 'प्रतिष्ठान' द्वारा 'भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला' के अंतर्गत 'रणमल्ल छंद' का संपादन-कार्य हाथ में लिया गया।

वीर रणमल्ल अपने समय का महान् योद्धा था। प्रस्तुत काव्य में उसके शौर्य की गाथा अंकित है। लघुकाय खंडकाव्य होते हुए भी यह पश्चिमोत्तर भारत की ततयुगीन उथल-पुथल का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। केन्द्रीय सत्ता के निर्बल हो जाने की स्थिति में सुदूर प्रदेश-स्थित स्थानीय उद्‌भट शासक किस प्रकार सत्ता के लिये सिरदर्द बन जाते थे और धर्मान्ध मुस्लिम सूबेदारों से अपनी कतिपय मानवीय मान्यताओं के लिए किस प्रकार साहस और जीवट के साथ लोहा लिया करते थे, इसका समुज्ज्वल उदाहरण वीर रणमल्ल का उदात्त चरित्र है।

फारसी तवारीखों में स्थानीय युद्धों का उल्लेख न होना अथवा तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाना, ऐतिहासिक दृष्टि से जो एक कमी है, उसकी पूर्ति देशी स्रोतों से संभव है। अत: तथ्यों की परिपूर्णता की दृष्टि से 'रणमल्ल छंद' जैसे ऐतिहासिक-काव्यों का प्रकाशन, विज्ञ अध्येताओं व पाठकों के लिए आवश्यक है।

डा० रघुवीरसिंहजी ने अपनी प्रस्तावना में काव्य के ऐतिहासिक तत्त्वों की जो समीचीन व्याख्या प्रस्तुत की है, उससे काव्य में निहित सामाजिक व सांस्कृतिक अंतर्धारा सुस्पष्ट हो गई है। प्रस्तुत काव्य में वर्णित प्रमुख युद्ध-रणमल्ल व जफरखां के

मध्य-की संपुष्टि डा० साहब ने विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों से भली प्रकार से की है। इसके अतिरिक्त अन्य-विशेषत: जफरखां प्रथम व शमसुद्दीन अबू राजा के साथ हुए-युद्धों के संबंध में जो गवेषणापूर्ण अभिमत प्रकट किया है, वह बड़ा मूल्यवान है। उनकी प्रस्तावना से सबसे बड़ा लाभ यह मिला है कि काव्य और उसकी विषय-वस्तु के संबंध में अब तक चले आ रहे मतभेदों का निराकरण हो गया है।

वयोवृद्ध डा० रघुवीरसिंहजी ने अति-व्यस्त रहते हुए भी जिस स्नेह व सौहार्द के साथ प्रस्तावना लिखने की कृपा की है; उसके लिए मैं स्वयं तथा संस्था की ओर से आभार मानता हूँ।

प्रतिष्ठान ने रणमल्ल छंद के सम्पादन-प्रकाशन का कार्य हाथ में लेकर जो लक्ष्य-पूर्ति करनी चाही थी, उसे मूर्त्त रूप में देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इसमें श्री मूलचंद 'प्राणेश' का कार्य विशेष सराहनीय है। इस संबंध में समय-समय पर संस्था की विचार-गोष्ठियों में सर्वश्री रामेश्वरप्रसाद पांडिया, चन्द्रदान चारण, सूर्यशंकर पारीक, माणक तिवारी 'बंधु' का उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

सत्यनारायण पारीक
संचालक

भा.वि.मं. शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राजस्थान)
नवरात्रि-स्थापना, सं० 2029 वि०

प्रस्तावना

पिछले तीस-पैंतीस वर्षों से प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय इतिहास, साहित्य, संस्कृति और भारत आदि के अध्ययन की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जाने लगा है। समूचे भारत के इतिहास, समाज और संस्कृति आदि के सामूहिक विवरण की एक मोटी रूप-रेखा बहुत-कुछ बन चुकी हैं। परंतु अब भी उसमें अनेकानेक बड़े-बड़े अंतराल हैं, जिनके कारण उक्त रूप-रेखा को किसी भी प्रकार परिपूर्ण नहीं किया जा सकता है। इन्हीं कमियों के कारण अनेकों प्रदेशों के इतिहास आदि के विवरण या तो अधूरे अथवा सर्वथा एकांगी ही हैं। इस प्रकार की कमियों तथा एक-पक्षीयता को दूर करने के लिए प्रादेशिक और क्षेत्रीय इतिहास तथा साहित्य के अधययन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना सर्वथा अनिवार्य हो गया है। पुनः यह बात भी सर्वमान्य हो गई है कि इतिहास, संस्कृति और समाज आदि के व्यापक ज्ञान तथा तद्विषयक अध्ययन को परिपूर्ण करने के लिये उस क्षेत्र अथवा प्रदेश के समकालीन अथवा उस काल-विशेष से सम्बद्ध साहित्य का भी गहराई तक विस्तृत अध्ययन और उससे प्राप्त जानकारी की पूरी-पूरी जाँच-पड़ताल होनी चाहिये।

यही नहीं प्रादेशिक भाषाओं अथवा विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के उद्गम, विकास और समय-समय पर उन पर पड़ने वाले अनेकानेक अलग-अलग प्रभावों को ठीक तरह से जानने और उनकी प्रगति को समझने के लिये भी विभिन्न-कालीन साहित्य के भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन के लिये यथासंभव विशेष प्रयत्न हो रहे हैं। अतः ऐसे प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय साहित्य की एक या अनेक कृतियों के सर्वाङ्गीण गहन अध्ययन से परिपूर्ण ग्रथों की सदैव समुत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा बनी रहती है, क्योंकि उनके प्रकाशन से तब तक सुलभ ज्ञान की सीमाओं में थोड़ी-बहुत वृद्धि की आशा की जाती है। अधिकाधिक अध्ययन और निरंतर चल रहे वाद-विवादों अथवा विवेचनों के फल-स्वरूप प्राप्त ऐसे विशेष तथ्यों को भी सयत्न परखा जाना चाहिए कि उनमें से जो

मान्य हो जावें, उनसे ज्ञान-सरिता को अधिक समृद्ध तथा गति-शील बनाया जा सके। यही कारण है कि श्रीधर व्यास कृत 'रा रणमल्ल छंद' के इस नए संस्करण का प्रकाशन क्षेत्रीय इतिहास साहित्य और भाषा के अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

श्रीधर व्यास कृत 'रा रणमल्ल छंद' काव्य की अब तक एक ही प्रति प्राप्त हुई है, जिसके आधार पर केशवलाल हर्षद्राय ध्रुव ने इसका संपादन कर "पंदरमा शतकना प्राचीन गुजराती काव्य" संकलन में इसे प्रथम बार सन् 1927 ई० में प्रकाशित किया था। अतएव यों प्राप्य एकमात्र पाठ को ही आधार-स्वरूप मान कर इस नए संस्करण के संपादक ने "पाठांशों के अन्वय, परम्परानुमोदित शैली, शब्दार्थ तथा भावार्थ के द्वारा पाठकों को रचयिता के भावों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है।" परन्तु प्राचीन काल में विभिन्न शब्दों को अलग-अलग लिखने की प्रथा नहीं थी, अत: तत्कालीन हस्तलिखित प्रतियों में सारे शब्दों के अक्षर एक के साथ दूसरा यों बराबर लगे हुए ही लिखे मिलते हैं, जिन्हें पाठक अपनी सूझ-बूझ तथा समझ के अनुरूप अलग-अलग शब्दों में विभक्त कर तदनुसार उसे पढ़ते और उनका वैसा अर्थ लगाते हैं। यही कारण है कि छं० 70 की दूसरी पंक्ति से केशव ह० ध्रुव ने जहां 'कसबे कड़ी' पर अधिकार करने की रणमल्ल के निश्चय को जाना, वहां 'प्राणेश' ने केवल 'कस बेकड़ी' (कवच बांधने) की प्रक्रिया को पर्याप्त समझा। पाठांशों के अन्वय परंपरानुमोदित शैली के अनुसार 'प्राणेश' द्वारा किया गया भावार्थ अधिक सही हो सकता है, परंतु धारगढ़ से लेकर मध्य गुजरात में भड़ौंच और खंभात तक आक्रमण करने तथा पट्टण को नष्ट करने का समुत्सुक रणमल्ल उनके बीच में पड़ने वाली इस महत्त्वपूर्ण 'कड़ी' को कैसे भूल सकता था, अत: ध्रुव का अर्थ कहीं अधिक न्याय-संगत प्रतीत होता है।

'रा रणमल्ल छंद' काव्य के रचना काल के बारे में विद्वानों के विभिन्न मत हैं। रचना-काल और काव्य की भाषा का अन्योन्य पारस्परिक अकाट्य संबंधा रहता है, अतएव उक्त काव्य का गहन भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन हुये बिना किसी प्रामाणिक निर्णय पर पहुंचना संभव नहीं होगा। परंतु इस काव्य के अंत:साक्ष्य से कुछ बातें स्पष्ट होती हैं। प्रथमत:, इस काव्य की रचना सन् 1399 ई० में अथवा उसके बाद ही हुई होगी, क्योंकि मंगलवार, दिसम्बर 17, 1398 ई० के दिन तैमूरलंग द्वारा दिल्ली के सुल्तान महमूद तुगलक को पराजित किये जाने का स्पष्ट उल्लेख इस काव्य के छं० सं० 5 में मिलता है। दूसरे, छं० सं० 2 और 10 में कवि ने रणमल्ल के लिए आशीवर्चन कहे हैं, उनसे सुनिश्चित रूपेण अनुमान यही होता है कि इस काव्य की रचना रणमल्ल के जीवन-काल में (सन् 1411 ई० के लगभग तक) ही हुई होगी। काव्य के

अंत:साक्ष्य से रचना-काल संबंधी एक और बात का अनुमान लगाया जा सकता है। इस काव्य में वर्णित युद्ध में रणमल्ल के प्रमुख विरोधी मुसलमान सेनानायक गुजरात के सूबेदार जफर खां का उल्लेख करते समय कवि ने उसके लिये बारंबार 'सुरताण' शब्द का प्रयोग किया है (छं० सं० 19, 21-23, 25) यद्यपि उक्त युद्ध के समय तक वह केवल गुजरात का सूबेदार था। अत: यह अनुमान तर्क-संगत है कि सन् 1407 ई० में जफर खां के मुजफ्फर शाह नाम से स्वयं को गुजरात का स्वाधीन सुलतान घोषित करने के बाद ही श्रीधर व्यास ने इस काव्य की रचना की होगी, जिससे अपने काव्य में उसने जफर खां के लिये अनायास ही बारंबार 'सुरताण' शब्द का प्रयोग किया। इस प्रकार से इस काव्य के रचना-काल को सन् 1408 से 1411 ई० तक में सीमित कर सकते है।

इस 'रा रणमल्ल छंद' काव्य में वर्णित मुख्य युद्ध के बारे में अब कोई शंका-समाधान का कारण नहीं रह जाना चाहिये। सन् 1391 ई0 में दिल्ली के तुगलक सुलतान नासिरूद्दीन मुहम्मद शाह द्वारा नियुक्त गुजरात के सूबेदार जफर खां ने सन् 1398-99 ई0 में जब ईडर पर दूसरी बार आक्रमण किया, तब ईडर के राव रणमल्ल के साथ उनका जो संघर्ष हुआ, उसी का विवरण इस काव्य में किया गया है। कारण कुछ भी हुआ हो, मुसलमान इतिहासकार भी यह स्वीकार करते हैं कि इस बार के आक्रमण में जफर खां को रणमल्ल के विरूद्ध कोई सफलता नहीं मिली थी।[1] इसी तथ्य को श्रीधर व्यास ने अपने इस काव्य में रणमल्ल की अनोखी अभूतपूर्व सफलता के रूप में अतिरंजित कल्पनापूर्ण शब्दावली के द्वारा प्रस्तुत किया तथा अंतिम छंद में 'इक्कछत्त रवि तळिकरूं' के रणमल्ल के स्वप्न का भी उल्लेख कर दिया है। जफर खां की इस विफलता का महत्त्व तब इस कारण भी बढ़ गया था कि इसके कुछ ही समय बाद तैमूर लंग द्वारा पराजित 'खुंदाळम', 'असपति' सुलतान महमूद तुगलक दिल्ली से भाग कर उससे सैनिक सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से जफर खां के पास गुजरात पहुँचा था।

इस काव्य के पूर्व भाग में खंभात, धूलका (धोलका), आदि नगरों में किये गये रणमल्ल के अनेकों उत्पातों तथा गुजरात की तत्कालीन प्रमुख नगरी पट्टण (पाटण) तक में व्याप्त उसके आतंक का वर्णन करते हुए कवि ने अनेकानेक मुसलमान वीरों, मलिकों (स्थानीय शासकों) आदि कई एक सेनानायकों के उसके हाथों पराजित होने का उल्लेख किया है। परन्तु रणमल्ल के ही मुख से उनकी जिन दो विशिष्ट विजयों की बात इस काव्य (छं0 सं0 32-33) में कहलाई गई है, उनकी ऐतिहासिकता और

1 सतीशचन्द्र मिश्र, दी राइज़ ऑफ मुस्लिम पावर इन गुजरात, पृ0 145-146 ।

उनसे संबद्ध व्यक्तियों की सही पहिचान विषयक विवेचन आवश्यक हो जाता है। प्रथम तो रणमल्ल ने 'जयीदफ्फर खान (के) दारुण दळ' को पराजित कर भगा देने का दावा किया है। उसके इस दावे का पूर्ण समर्थन मेवाड़ के सुविख्यात महाराणा कुंभा के समय में अंकित चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ तथा कुंभलगढ़ की प्रशस्तियों में मिलता है, जहां उसे क्रमशः 'पराक्रमी शक (मुसलमान) पृथ्वीपति के गर्व को मिटाने वाला गुर्जर-मण्डलेश्वर' और 'राजाओं के समूह को हराने वाले पत्तन (पट्टण) के स्वामी दफर खां (जफर खां) को भी कुंठित करने वाला' वीर रणमल्ल लिखा है।[2] चूंकि ये उल्लेख मेवाड़ के राणा खेता (क्षेत्रसिंह) कालीन इतिहास (1364-1382 ई0) के संदर्भ में हैं, इन उल्लेखों में जफर खां प्रथम का ही निर्देश है, जो सन् 1361 ई0 से सन् 1372 ई0 में अपनी मृत्यु-पर्यन्त गुजरात का सूबेदार था।

रणमल्ल का दूसरा दावा शमसुद्दीन को अपने वश में करने तथा पारस्परिक युद्ध में (पराजित हो जाने पर) उसके भाग खड़े होने का है। यह समसुद्दीन गुजरात के क्षेत्रीय इतिहास में सुविख्यात शमसुद्दीन अबू राजा ही था, जो जफर खां प्रथम के समय में संभवतः उसके साथ ही गुजरात का नायब सूबेदार नियुक्त होने के बाद ही वह सन् 1374-75 ई0 में गुजरात से वापस दिल्ली को लौट गया था। गुजरात की नायब-सूबेदारी के अपने कार्यकाल में अनधिकार-प्रवेशी इस शमसुद्दीन अबू राजा ने अनेकों नये तौर-तरीके चलाए तथा उस क्षेत्र के निवासियों आदि के साथ काफी कड़ाई की थी।[3] संभवतः ऐसे ही किसी मामले में रणमल्ल के साथ उसका विरोध उत्पन्न हो गया होगा, जिसके कारण आगे चल कर शमसुद्दीन को रणमल्ल के हाथों मुंह की खानी पड़ी थी। रणमल्ल और शमसुद्दीन के इस संघर्ष तथा कशमकश का कहीं अन्यत्र भी कोई विवरण प्राप्त नहीं है।

तब गुजरात दिल्ली सल्तनत के आधीन एक सूबा था, जहां के शासक सूबेदार समय-समय पर बदलते रहते थे। अतः ऐसे प्रान्तीय शासक सूबेदारों की स्थानीय महत्त्व की ही छोटी-बड़ी अनेकानेक कार्यवाहियों को लेकर गुजरात अथवा अन्य प्रांतों का प्रांतीय इतिहास लिखना अनावश्यक या निरर्थक ही समझा गया होगा। पुनः केवल

---

2 ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, 1, पृ0 253-255, पा0 टि0 सहित(वीर विनोद, 1, पृ0 412, श्लोक सं0 196('एकलिंग महात्म्य' के 'राजवर्णन' अध्याय के श्लोक सं0 91, 101।

3 सतीशचन्द्र मिश्र, दी राइज ऑफ मुस्लिम पावर इन गुजरात, पृ0 127-129।

क्षेत्रीय महत्त्व की ऐसी घटनाओं को दिल्ली सल्तनत के अधिक व्यापक इतिहास में कैसे स्थान मिल सकता था? और यह भी बहुत संभव है कि अपनी अथवा अपने आधीन प्रमुख अधिकारी की ऐसी छोटी-मोटी विफलताओं की सूचना दिल्ली लिख भेजना भी प्रांतीय सूबेदार ने अनुचित्त और अवांछनीय ही समझा होगा। अतएव फारसी अथवा अन्य आधार सामग्री में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं होने के कारण ही रणमल्ल के काल की किसी घटना के उक्त काव्य में उल्लेख को सर्वथा अविश्वसनीय नहीं कहा जा सकता है।

छ0 सं0 62-63 में उल्लिखित सोनगिरि (जालोर) के कान्हड़देव के 'गज्जणवइ असुरइ' के साथ युद्ध कर सोमनाथ की मूर्ति छीन लेने और उसको पुनः प्रतिष्ठित करने की बात में उल्लेखनीय अनैतिहासिकता यही है कि कवि ने भ्रमवश दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी को 'गज्जणवइ' (गजनीपति) कहा है। महमूद गजनी द्वारा सन् 1025 ई0 में ध्वस्त सोमनाथ के सुप्रसिद्ध मंदिर का गुजरात के चौलुक्य शासकों ने पुनर्निर्माण करवाया था। गुजरात-विजय के लिये अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भेजी गई मुसलमानी सेना ने सोमनाथ के इस पुनर्निर्मित मंदिर को जून 6, 1299 ई0 को ध्वस्त कर उसमें स्थापित शिवलिंग के इन खण्डों को अपने साथ लेकर जब यह विजयी मुसलमानी सेना दिल्ली को लौट रही थी, तब जालौर के पास उसमें उत्कट विद्रोह उठ खड़ा हुआ। उससे पूरा लाभ उठा कर जालौर के शासक कान्हड़देव ने उस भग्न शिवलिंग के उन खण्डों को अपने अधिकार में ले लिया और बाद में उन्हें यत्र-तत्र प्रतिष्ठित किया। यों "रावल कान्हड़देव ने हिन्दुस्तान की बड़ी मर्यादा बनाये रखी"।[4] अतः कवि ने यहां कान्हड़देव का सादर उल्लेख किया है, परन्तु अपने इस कथन में उपयुक्त सुस्पष्ट अनैतिहासिकता की ओर कवि का ध्यान कैसे नहीं होगा, यह बात समझ में नहीं आती है।

ईसा की 14वीं शती के मध्य में जब रणमल्ल ईडर की राजगद्दी पर बैठा, तब तक गुजरात प्रदेश में दिल्ली के सुलतानों का आधिपत्य सुदृढ़ रूप से स्थापित हो चुका था, परन्तु वह मुख्यतया समतल मैदानी क्षेत्रों, और प्रमुख नगरों अथवा कस्बों तक ही अधिकतर सीमित रहा था। गुजरात-विजय के बाद भी उसके अधीनस्थ प्रभावपूर्ण प्रमुख शक्तिशाली राजपूतों के सुदृढ़ गढ़ मुसलमानी सत्ता की विरोधी पूर्णतया स्वतंत्र इकाइयों के रूप में यथावत् बने रहे। गुजरात के पूर्वी सीमांत क्षेत्र में स्थित ईडर और

---

4 अशोक मजुमदार, चौलुक्याज ऑफ गुजरात पृ0 43-48, 370.375(सतीशचन्द्र मिश्र, दी राइज ऑफ मुस्लिम पावर इन गुजरात पृ0 63-64; दशरथ शर्मा, राजस्थान थ्रू दी एजेज, 1, पृ0 639-641(मुंहणोत नैणसी की ख्यात, (नागरी प्रचारिणी सभा), पृ0 155-160 ।

चांपानेर-पावागढ़ में तब मुसलमानी सत्ता के विरोधी प्रश्रय पाने लगे, तथापि विकट अगम पहाड़ों में स्थित सुदृढ़ दुर्गों से शासन कर रहे इन विरोधी स्वाधीन राजपूत शासकों का दमन करने का तब कोई सुव्यवस्थित विशेष सशक्त आयोजन न संभव था और न किया जा सका। फिरोज तुगलक के शांतिपूर्ण समृद्धि-कारक शासनकाल में कई वर्षों तक गुजरात की सूबेदारी करने के बाद अपनी स्थानीय स्थिति को सुदृढ़ समझ कर तब जफर खां प्रथम अथवा उसके सहायक शमसुद्दीन अबू राजा ने तदर्थ जो प्रयत्न किये थे, उनकी विफलता का उल्लेख पहिले किया ही जा चुका है। गुजरात में स्वाधीन प्रांतीय सलतन की सुनिश्चित संभावना के सुस्पष्ट होने के बाद ही ईसा की 15वीं सदी में तदर्थ सीमित सफल आयोजन संभव हो सके थे। अत: ईसा की 14वीं सदी के उत्तरार्द्ध में इन सीमांत पहाड़ी प्रदेशों में व्याप्त परिस्थितियों तथा वहां के राजपूत राजाओं के दृष्टिकोण और उनकी गतिविधियों का अतिरंजित होते हुए भी बहुत-कुछ स्पष्ट चित्रण 'रा रणमल्ल छंद' में मिलता है, जिससे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार-सामग्री के रूप में इस काव्य का अध्ययन और विवेचन किया जाना चाहिए।

इस संस्करण के संपादक द्वारा यत्र-तत्र अनजाने दुहराई गई एक ऐतिहासिक भूल का निराकरण करना अत्यावश्यक जान पड़ता है। समूचे राजस्थान पर अपना आधिपत्य स्थापित करने वाली एकमात्र मुसलमानी सत्ता मुगल साम्राज्य ही थी, अतएव राजस्थान में यवन सत्ता और मुगल आधिपत्य पर्यायवाची शब्द बन गए। यही कारण है कि इस काव्य के अंतिम छंद (सं0 70) का अर्थ लिखते समय अनायास ही 'किळवायण' का अर्थ 'मुगल' लिख दिया। इसी प्रकार भूमिका में भी पृ0 26-27 पर 'यवन' के स्थान में भ्रमवश यदा-कदा 'मुगल' लिखा गया है। यह तो सुज्ञात है कि तब दिल्ली के सुलतानों अथवा गुजरात के सूबेदारों में कोई भी मुगल नहीं था।

इसी संदर्भ में इस काव्य के एक और उल्लेख का स्पष्टीकरण अनिवार्य हो जाता है। छं0 सं0 18 और 50 में गुजरात की मुसलमानी सेना में विभिन्न जाति के सैनिकों आदि का विवरण लिखते समय कवि ने 'मूंगल मेच्छ' तथा 'मूंगळ महामल्लिक' का भी उल्लेख किया है। शब्दार्थ में 'मूंगळ' का अर्थ 'मुगल' दिया है, जो ठीक नहीं है; उसका सही अर्थ 'मंगोल' है। सिंधु नदी के पार अफगानिस्तान आदि उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रदेशों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर ईसा की 13वीं शती के मध्य से ही ये बौद्ध धार्मावलम्बी मंगोल दिल्ली की सल्तनत पर निरंतर आक्रमण करते रहते थे। इन आक्रमणों में कैद हो गये मंगोलों ने जलालुद्दीन खिलजी और अलाउद्दीन

खिलजी के शासनकालों में इस्लाम धर्म अंगीकार कर लिया था। तुगलक सुलतानों के शासनकाल में उन मुसलमान मंगोलों के वंशज दिल्ली सल्तनत की सेना में पुनः भरती किये जाने लगे थे, और उसमें से कुछ यदा-कदा उच्च पदों पर भी नियुक्त हुए थे।[5] सो उक्त छंदों में ऐसे ही मुसलमान मंगोलों में 'मूंगळ' वंशजों का उल्लेख है।

साहित्यिक और भाषा-वैज्ञानिकों दृष्टियों से भी 'रा रणमल्ल छंद' का सविस्तार गंभीर-गहन अध्ययन अत्यावश्यक है। ईसा की 14वीं शती गुजरात और राजस्थान के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण निर्णायक परावर्तन-बिन्दु प्रस्तुत करती है। गुजरात-विजय के बाद वहां मुसलमानी सत्ता स्थापित हो गई और धीरे-धीरे उसके आधिपत्य के साथ उसकी संस्कृति, भाषा आदि का प्रभाव समूचे प्रांत में बढ़ने लगा। उधर राजस्थान में चित्तौड़ के प्रथम साके तथा मेवाड़ में रावल घराने की समाप्ति के साथ ही तब तक चले आ रहे पूर्व मध्यकालीन राजस्थान तथा उसकी युगयुगीन ऐतिहासिक परम्पराओं आदि का भी अंत हो गया। परंतु राजस्थान के उस पुरातन राजनैतिक मानचित्र को पूर्णतया मिटा कर सारी स्लेट को साफ कर देने वाले दिल्ली सल्तनत के प्रबल-प्रतापी मुसलमान शासक भी वहां अपना मनचाहा नया राजनैतिक मानचित्र अंकित नहीं कर सके, प्रत्युत ईसा की इस 14वीं शती के मध्य तक दिल्ली की मुसलमानी सल्तनत का रहा-सहा प्रभाव भी धीरे-धीरे वहां से लुप्त होने लगा था। इस अराजकतापूर्ण युगांतर-काल में पूर्व तथा पश्चिम क्षेत्रों से आए हुए कई नये राजपूत घराने राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जड़ें जमाने लगे हुए थे। इस प्रकार तब राजस्थान के राजकीय ही नहीं, पूर्णतया नये राजपूत राजवंशीय मानचित्र का भी सीमांकन होने लगा था। यों राजस्थान के इतिहास में जिस सर्वथा नये युग का आविर्भाव हुआ, उसके साथ ही राजस्थान के साथ गुजरात के तब तक चले आ रहे सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा भाषिक आदि सारे संबंध धीरे-धीरे क्षीण होने लगे, और अब पाई जाने वाली सब विभिन्नताएं तदन्तर निरंतर बढ़ती ही गईं। अतएव ईसा की 15वीं शती के प्रारंभ में रचित ऐसे काव्यों का अध्ययन साहित्यिक और भाषाई एकता की महत्त्वपूर्ण कड़ियों के रूप में किया जाना चाहिए। पुनः ऐसे काव्यों में पुरानी गुजराती अथवा जूनी राजस्थानी को प्राकृत या अपभ्रंश से जोड़ने वाली अनेकानेक प्राप्य कड़ियां भी खोजी जानी चाहिए, जिससे बाद में प्रयुक्त होने वाले तथा आज भी प्रचलित अनेकों शब्दों की ठीक व्युतपत्ति आदि ज्ञात की जाकर उसे सही रूप में निर्धारित की जा सके। गुजराती तथा राजस्थानी के साथ ही हिंदी के शब्द-कोष की भी वह विशेष उल्लेखनीय

---

5 मेहदी हुसैन, दी राइज एण्ड फाल ऑफ मुहम्मद बिन तुगलक, (1938 ई0), पृ0 227, 208 ।

उपलब्धि होगी।

अपनी विस्तृत भूमिका में इस संस्करण के संपादक ने 'रा राणमल्ल छंद' का संज्ञा और स्वरूप का सयत्न विस्तृत विवेचन किया है। इस काव्य-ग्रंथ के अकस्मात पाये जाने तथा उसके प्रथम संस्करण के संपादन और प्रकाशन संबंधी जानकारी के साथ ही इस काव्य के रचयिता तथा उसकी अन्य रचनाओं विषयक ज्ञात विवरण भी दे दिया है। इस काव्य में वर्णित मुख्य तथा अन्य युद्धों के बारे में अब तक चल रहे वाद-विवादों को सुलझाने अथवा भ्रांतियों को दूर करने का संपादक ने जो उल्लेखनीय सफल प्रयत्न किया है, उसकी परिपुष्टि इस प्रस्तावना में पहिले दिये गये विवेचन से की जा चुकी है। इस काव्य की भाषा की समीक्षा करते उसमें परिनिष्ठित प्राकृत अथवा अपभ्रंश की शब्दावली के उदाहरण देने के बाद यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि अपनी किन विशेषताओं के कारण वह प्राकृत या अपभ्रंश से पृथक् और पश्चात्-कालीन राजस्थानी भाषा के अति निकट देख पड़ती है। इस काव्य के साहित्यिक महत्त्व को सुस्पष्ट करने के लिये उसके काव्यत्व, उसमें देख पड़ने वाले युग-चित्रण तथा उसमें पाये जाने वाले रस, अलंकार, छंद, आदि के साथ ही उसकी वर्णन-शैली और शब्द-प्रयोगों की भी सोदाहरण समीक्षा की गई है। इस सब ही विषयों पर कुछ भी लिखना मेरे लिये सर्वथा अनधिकार चेष्टा ही होगी। मूल-पाठ के साथ पाठ-भेद और मूल काव्य का हिन्दी में भावार्थ तथा अन्त में शब्द-कोष दे दिया गया है, जिससे इस काव्य के मूल-पाठ को समझने तथा उसके अध्ययन में बड़ी सुविधा हो गई है। इस प्रकार सब ही विभिन्न वर्ग, स्तर अथवा रुचि के पाठकों के लिये इस संस्करण को सहायक और उपयोगी बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

अतएव यह बात तो सर्वथा सुनिश्चित जान पड़ती है कि इस महत्त्वपूर्ण काव्य के इस नये सुसंपादित संस्करण के प्रकाशन तथा उसकी इस विस्तृत भूमिका में प्रस्तुत विवेचन से इस काव्य के ही नहीं, तत्कालीन साहित्य के भी गहन अध्ययन का एक नया अध्याय अनायास ही प्रारम्भ हो जायेगा। अतएव 'रा रणमल्ल छंद' के इस नये संस्करण का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि इसके पठन-पाठन के भाषा-वैज्ञानिकों तथा साहित्यकारों को भी नई दिशा और विशेष प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी।

'रघुबीर निवास',
सीतामऊ (मालवा)
सितम्बर 20, 1972 ई०

- रघुबीरसिंह

भूमिका

रणमल्ल छंद : संज्ञा और स्वरूप

'रणमल्ल छंद' एक 'छंद' संज्ञक काव्य है। स्वयं रचयिता ने भी इसे 'बरवीर छंद' कहा है।[1] सामान्यत: 'छंद' शब्द का अर्थ 'नियमित अक्षरों अथवा मात्राओं में रचित एक पद्य-प्रकार' लिया जाता है। 'छंद' का सर्वप्रथम उल्लेख ऋगवेद में मिलता है। इसकी व्युत्पत्ति छद् धातु से मानी गयी है, जिसका अर्थ आवर्त करने या रक्षित करने के साथ-साथ प्रसन्न करना भी होता है। प्रसन्न करने के ही अर्थ में निघण्टु में छंद धातु भी मिलती है। कुछ विद्वानों का मत है कि-'इसी से छंद शब्द का सम्बन्ध मानना अधिक युक्तिसंगत है।'[2] संस्कृत साहित्य में देवी-देवताओं की स्तुतियों (स्तोत्रों) में प्राय: एक ही छंद का व्यवहार पाया जाता है जिसका अभिप्राय सम्बन्धित देवी-देवताओं को सुप्रसन्न करना है। राजस्थानी साहित्य में भी इस प्रकार की अनेक रचनाएं उपलब्ध हैं, जिनको कहीं तो छंद की जाति-रसावळो, त्राटको, पाद्धड़ी, छप्पय, रोमकंद, मोतीदांम आदि-से अभिहित किया गया है और कहीं केवल छंद कह कर। शनै: शनै: राजस्थानी कवियों द्वारा देव-स्तुति-परक साधनों का उपयोग अपने आश्रयदाताओं की स्तुति के लिए होने लगा। राजसभाओं में भाट और चारणों द्वारा जो विरुदावली बोली जाती थी, उसे 'छंद' कहा जाता था-

"तिणि प्रस्तावि पापश्रुत भट्टि मदनकुमर तणा छंद बोल्या।"
तथा-"इहि अवसरि सुश्रुत भट्टि राय विवेक तणा छंद भण्या।"

-प्रबोध चिंतामणि।

इसी प्रकार इस काल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं के चरित्र से सम्बन्धित अथवा, अन्य चरितात्मक काव्यों को छंद संज्ञा से अभिहित करना पसंद

1 रणमल्ल छंद, छं० 1

2 हिन्दी साहित्य कोश, पृ० 290-91

किया। इन छंद संज्ञक रचनाओं में भी पूर्वोल्लिखित दो प्रकार उपलब्ध होते हैं-प्रथम तो एक ही छंद- (मंगलाचरण और कलस को छोड़कर) में रचित और द्वितीय विभिन्न प्रकार के छंदों में रचित। प्रस्तुत रणमल्ल छंद द्वितीय प्रकार की रचना है। इसमें विभिन्न प्रकार के दस छंदों का उपयोग किया गया है।

'छंद' शब्द के स्तुतिपरक अर्थ के साथ-साथ पर्याय-भेद से एक अर्थ 'रचित' भी होता है। बहुत सम्भव है छंद-संज्ञक काव्यों के रचयिताओं के समक्ष अपनी कृति के नामकरण के समय यही अर्थ रहा हो। इस विधा के उपलब्ध काव्यों-राउ जैतसी रउ छंद : वीठू सूजो तथा मेहो, रामदेवजी रो छंद : जालू, राजा करणसिंहजी रो छंद : राठौड़ नाहर खान रो छंद : गाडण माधोदास, माताजी रो छंद : वीठू भोमो : जगडूसाहनो छंद : लीलो, पदमावती छंद, हर्षसागर, गोरखनाथजीरो छंद : गाडण केसो इत्यादि-के देखने पर उक्त सम्भावना और भी अधिक परिपुष्ट होती है क्योंकि उक्त काव्यों में कवियों ने अपने कथानायक के चरित्र का विस्तार के साथ वर्णन किया है।

स्वरूप

स्वरूप की दृष्टि से 'रणमल्ल छंद' वीर-रसात्मक ऐतिहासिक खंडकाव्य की कोटि में आता है। ऐसा प्रायः विवेचकों-रा.ब. केशवलाल हर्षद्राय ध्रुव,[1] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,[2] श्री केशवराम काशीराम शास्त्री,[3] श्री जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दबे,[4] डा० हरीश[5]-ने स्वीकारा है; परंतु डा० दशरथ शर्मा का मत इससे भिन्न है। उन्होंने रणमल्ल छंद को प्राचीन ऐतिहासिक रास अथवा रासान्वयी-काव्य मानते हुए इसके सर्जन के सम्बन्ध में परिकल्पना की है कि-"सम्भवतः सन् 1398 में मुजफ्फरशाह गुजराती ने ईडर पर आक्रमण किया। रणमल्ल ने वीरतापूर्वक उसका समाधान किया। कई दिनों तक ईडर का दुर्ग शत्रुओं से घिरा रहा। ऐसे अवसरों पर अपने मनोविनोद और शत्रुओं को चिढ़ाने के लिए, घिरे सैनिक अनेक प्रेक्षणक और रास (हम्मीर महाकाव्य और कान्हड़वे प्रबन्ध में इसका उल्लेख मिलता है) किया करते थे। विशेषकर सिपाहियों को जोश दिलाने वाली कृतियां ऐसे समय में अभिनीत होती होंगी। श्रीधर की कृति

1 प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ० 9

2 हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 52

3 कविरचित भाग 1-2, पृ० 17

4 गुजराती साहित्य का इतिहास, पृ० 30

5 शोध-पत्रिका, वर्ष 12, अंक 3

शायद इसी 1398 ई० के घेरे के समय में निर्मित हुई हो।"[1] डा० दशरथ शर्मा ने जिन काव्यों (हम्मीर महाकाव्य और कान्हड़दे प्रबन्ध) के वर्णन के आधार पर उपर्युक्त परिकल्पना की है, वह वास्तविक न होकर एक रूढि संभावित है। जिसे महा-रस-भंग अथवा छत्र-भंग संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। इस प्ररूढि का उत्स बाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है-"सुवेल पर्वत पर बैठे हुए राम-लक्ष्मण लंका के वैभव को देख रहे हैं। रावण का राज्य-वैभव अद्वितीय है। राम के मित्र सुग्रीव से रावण का यह वैभव नहीं देखा गया और वह छलांग लगाकर लंका जा पहुँचा। वहां पहुँच कर उसने रावण के विचित्र मुकुटों को उतार कर पटक दिया। तत्पश्चात् दोनों योद्धा मल्लयुद्ध में प्रवृत्त हुए। सुग्रीव ने मल्लयुद्ध में भी रावण को खूब छकाया तथा विजयी बन कर राम के पास लौट आया।"[2] अध्यात्म रामायण (सर्ग, 5) आनन्द-रामायण, नृसिंह पुराण, रामचन्द्रिका (15/48) और तुलसी कृत रामचरितमानस (लंका कांड, 13) में उक्त छत्रभंग का कार्य स्वयं रामचन्द्रजी अपने हाथों से सम्पादित करते हैं।

राजस्थानी काव्यों-पद्मनाभ-कान्हड़देव प्रबन्ध, महेश-हम्मीर रासो, जोधराज-हम्मीररासो, चंद्रशेखर-हम्मीरहठ इत्यादि-में उपर्युक्त प्ररूढि कुछ परिष्कृत रूप से प्रयुक्त हुई है, जिसमें घिरे हुए कथानायक के यहां राजप्रासाद में नृत्य और राग-रंग का आयोजन होता है। उसे देख कर घेरा डालने वाल प्रतिद्वंद्वी उद्विग्न हो जाता है। वह अपने किसी धनुर्धर को आज्ञा देता है कि-उक्त रंग में भंग करो। धर्नुधर अपना कौशल दिखाता है, जिससे नृत्य-अनुरक्त नटी धराशायी हो जाती है अथवा उसका वार खाली चला जाता है और वह बाण सभासदों के सम्मुख आ गिरता है। कथानायक अपने प्रतिद्वंद्वी की चाल को तत्काल समझ लेता है। इतने में कोई वीर (विशेषकर शरणागत) कथानायक के सम्मुख उपस्थित होकर प्रतिपक्षी पर वार करने की अनुमति मांगता है। राजा केवल छत्रभंग की अनुमति दे देता है। स्वामीभक्त वीर अपने लक्ष्य पर बाण चलाता है, जिससे प्रतिद्वंद्वी (बादशाह या सेनापति) का छत्रभंग हो जाता है। समस्त विपक्षी दल इस घटना से सशंकित हो जाता है।

पूर्व कथित रामचरित में प्रयुक्त तथा राजस्थानी काव्यों में प्रयुक्त उक्त कथानक रूढि में जो स्वरूपगत अंतर दृष्टिगोचर होता है, वह केवल परिस्थिति-जन्य है। राम के द्वारा घेरा गया रावण अन्त में पराजित होता है, परन्तु राजस्थानी काव्यों के

1 रास और रासान्वयी काव्य, पृ० 243

2 बाल्मीकि रामायण, युद्ध कांड पूर्वार्द्ध, सर्ग 10

नायक सबल (बादशाह आदि) प्रतिद्वंद्वियों के द्वारा घिरे रहने के उपरांत भी अन्त में विजयी होते हैं। अतः राजस्थानी कवियों ने अपने नायकों के चरित्र को उच्च चित्रित करने के लिए उक्त प्ररूढि का परिष्कार कर लिया है। अतएव इस कथानक-रूढि को देखते हुए डा० दशरथ शर्मा की छंद की सर्जन-सम्बन्धी परिकल्पना को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

यदि डा० शर्मा द्वारा परिकल्पित उक्त परिकल्पना को थोड़ी देर के लिए वास्तविक मान लें तो भी प्रस्तुत रणमल्ल छंद को प्रेक्षणक अथवा रास की कोटि में नहीं रखा जा सकता, क्योंकि-'पेंखण' एक सूत्रधार विहीन नाट्यरूपक होता है और इसका नायक कोई निम्नजातीय व्यक्ति होता है।[1] जबकि रणमल्ल छंद का नायक एक कुलीन क्षत्रिय है और स्थान-स्थान पर कवि ने वर्णन दिए हैं। ऐसी स्थिति में रणमल्ल छंद को पेंखण एवं तत्सदृश कोई नाट्यरूपक नहीं कहा जा सकता। रासो साहित्य पर विचार करते हुए श्री नरोत्तमदास स्वामी ने स्वरूप की दृष्टि से रणमल्ल छंद को रासो शैली की रचना माना है।[2] विस्तार के अतिरिक्त काव्यगत अन्य विशेषताएं-ऐतिहासिकता, वर्णनात्मकता, वीर-रस परिपाक, अलौकिक तत्वों का समावेश इत्यादि-प्रस्तुत छंद में उपलब्ध है। अतएव रणमल्ल छंद को स्वरूप की दृष्टि से ऐतिहासिक खण्डकाव्य स्वीकार कर लेने में कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

रणमल्ल छंद : रचना, रचयिता और रचनाकाल

रचना

रणमल्ल छंद की एकमात्र हस्तलिखित प्रति पूना के डेकन कॉलेज के सरकारी संग्रह (No. 1541 of 1891-95, Dec. Col., Extent foll 54+4) में उपलब्ध है जिसे प्रकाश में लाने का श्रेय-प्राचीन गुजराती-साहित्य के उद्धारकर्ता स्व० रा०ब० केशवलाल हर्षद्राय ध्रुव को है। जब उन्होंने कान्हड़दे प्रबन्ध के पाठशुद्ध्यर्थ पूना से उसकी हस्तलिखित प्रति मंगवाई तो उन्हें अकस्मात् 'रणमल्ल छंद' के दर्शन हुए। अनुसन्धित्सुवृत्ति ने तत्काल इसके महत्व को आंक लिया और सन् 1927 ई० में

---

1 गर्भवमर्श रहितं प्रङ्खणं हीन नायकम्।
असूत्रधारमेकाङ्क मविष्कम्भ प्रवेशम्।।
नियुद्धसम्फेट युतं सर्व वृतिसमाश्रितम्।
नेपथ्ये मीयते नान्दी तथा तत्र प्ररोचना ।।
-साहित्य दर्पण, 6 प०, 286-87

2 रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो, पृ० 22

गुजरात वर्नाक्यूलर सोसायटी द्वारा संचालित-कवीश्वर दळपतराम स्मारक ग्रंथमाळा, नं० 4 के "पंदरमा शतकना प्राचीन गुजराती काव्य" नामक संकलन में इसे सुसम्पादित करके साहित्य-जगत के समक्ष रखा।

रचयिता

रणमल्ल छंद के रचयिता ने अपनी काव्यकृति के प्रारम्भ में राव रणमल्ल का सुविस्तृत परिचय दिया है, परन्तु अपने जीवन के विषय में कुछ नहीं लिखा। यदि पूना डेकन कॉलेज के सरकारी संग्रह में उपलब्ध हस्तलिखित प्रति पर प्रतिलिपिकार ने पुष्पिका, "श्रीधर व्यास कृत रा रणमल्ल छंद। सं० 1662 मार्ग।"[1] न दी होती तो यह महत्वपूर्ण काव्य एक अज्ञात कवि की कृति के रूप में साहित्य-जगत के समक्ष आता। इस संक्षिप्त, पर अत्यन्त महत्वपूर्ण पुष्पिका द्वारा 'रणमल्ल छंद' के रचयिता के नाम के साथ-साथ उसके व्यास होने का भी उद्बोध होता है। व्यास-ब्राह्मणों का एक उपवर्ग, एक उपाधि और एक राजकीय पद होता है। रणमल्ल छंद के अन्तर्गत पर्याप्त लम्बे संघर्ष का स्मरण[2], हिन्दू संस्कृति की रक्षार्थ रणमल्ल को प्रकारान्तर से दिया गया उद्बोधन[3] एवं "रणमल्लो जयति भूभर्ता",[4] "शकदल मद मर्दनो जयति"[5] आशीर्वचन इत्यादि उल्लेख, व्यास श्रीधर को व्यास को सामान्य जाति एवं सामान्य कथावाचक की उपाधि से पृथक् उद्घोषित करता है।

श्री के०एम० मुन्शी[6] श्रीधर को रणमल्ल का राज्याश्रित कवि मानते हैं, परन्तु यह अधिक सम्भव है कि-श्रीधर रणमल्ल का राज्याश्रित कवि न होकर उसके धर्माधिकारी के रूप में व्यास पद पर रहा हो। व्यास या पुरोहित सामान्यतया धार्मिक मामलों में शासक का परामर्शदाता होता था। हम्मीर का पुरोहित विश्वरूप था और जालौर में सोमचन्द्र व्यास एक मंत्री की स्थिति को धारण किए हुए था।[7] रणमल्ल छंद में वर्णित रणमल्ल के क्रिया-कलापों को देख कर भी यही मत परिपुष्ट होता है कि रणमल्ल केवल राज्य-लोभ के कारण नहीं लड़ा था, बल्कि हिन्दू-संस्कृति की रक्षार्थ

---

1 प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ० 2

2 छंद, 32, 33

3 छंद, 39-40

4 छंद, 2

5 छंद, 6

6 गुजराती एण्ड इट्स लिटरेचर, पृ० 101

7 डा० दशरथ शर्मा-अर्ली चौहान डाईनेस्टीज, पृ० 200

ही उसने यवनों से लोहा लिया था। कोई आश्चर्य नहीं कि उसके मूल में भी व्यास श्रीधर का प्रोत्साहन रहा हो।

कवि की अन्य रचनाएं

व्यास श्रीधर की रणमल्ल छंद के अतिरिक्त दो अन्य रचनाएं वर्तमान तक ज्ञात है,[1] जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

भागवत दशम स्कंध : इसकी एक खंडित प्रति प्राचीन गुजराती के अन्वेषक स्व० मणिलाल बकोर भाई व्यास को मिली थी। यह केवल 127 छंदों की अधूरी प्रति है।

सप्तशती (श्रीधर छंद) : इसमें मार्कण्डेय पुराण के आधार पर संक्षिप्त देवी चरित्र का वर्णन है। यह 120 छंदों का सुन्दर काव्य है। जिसमें प्रथम एक शार्दूल विक्रीड़ित छंद संस्कृत में है। शेष काव्य में-चौपई (धात), आर्या (उपगीति), रूपक, पुरबहू (दोहरा), सिंहविलोकित, सारसी (हरिगीत), हांढकी (मरहट्ट), दुमिला, भुजंगप्रयात, नाराच और छप्पय संज्ञके छंदों का प्रयोग हुआ है।

रचनाकाल

'रणमल्ल छंद' में कवि के जीवनवृत्त की तरह रचनाकाल का भी उल्लेख नहीं है। अंत:साक्ष्य से ऐसा प्रतीत होता है कि इस काव्य की रचना सन् 1398 ई० के उपरांत ही हुई होगी। क्योंकि इस काव्य में दिल्लीपति के पराभव के लिए दो व्यक्तियों को समर्थ माना गया है-एक तो "शक शल्य रणमल्ल" और द्वितीय "यम तुल्य तिमिरलिंग अर्थात् तैमूर" को। तैमूर ने सन् 1398 ई० में दिल्ली पर अधिकार करके सहस्त्रों निरपराध व्यक्तियों को मरवा डाला था। श्री के०एम० मुन्शी रणमल्ल छंद का सं० 1457 वि० में रचा जाना मानते हैं।[2]

रणमल्ल छंद में वर्णित युद्ध

रणमल्ल छंद भाषा, भाव एवं इतिहास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है, ऐसा सभी समालोचक समवेत स्वर से स्वीकार करते हैं, परंतु छंद में वर्णित युद्ध के विषय को लेकर विद्वानों के पृथक्-पृथक् दो वर्ग बने हुए हैं। प्रथम वर्ग के विद्वान्-जिनमें स्व० रा०ब० केशवलाल हर्षद्राय ध्रुव,[3] श्री रामचन्द्र शुक्ल,[4] डा० हरीश[5] और डा०

1 रा.ब. केशवलाल ह० ध्रुव-प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ० 6-7

2 दे० गुजराती एण्ड इट्स लिटरेचर, पृ० 101

3 प्राचीन गुर्जर काव्य, पृ० 3-4

4 हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 52

5 शोध पत्रिका, वर्ष 12, अंक 3

शिवप्रसाद सिंह[1] प्रमुख हैं-इस छंद में वर्णित युद्ध को 'झफरखान' से सम्बन्धित युद्ध मानते हैं। इसके विपरीत द्वितीय बर्ग के विद्वान्-जिनमें मौ० सैयद अबुझफर नदवी,[2] डा० दशरथ शर्मा व श्री दशरथ ओझा,[3] केशवराम काशीराम शास्त्री,[4] प्रो० श्री मंजुलाल मजमुदार[5] और श्री जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे[6] प्रमुख है-इस छंद में वर्णित युद्ध को "मलिक मुफरर्ह, निजामशाह सुल्तानी, फरहतुल मुल्क, रास्तीखान" से सम्बन्धित युद्ध माना है।

उपर्युक्त युद्ध को मलिक मुफर्रह से सम्बन्धित मानने वाले विद्वानों ने अपने अभिमत का आधार रणमल्ल छंद में प्रयुक्त मलिक्क एवं मुफरद शब्दों को बनाया है। उनकी मान्यता है कि-रणमल्ल छंद के छंद 19 में प्रयुक्त 'मलिक्क मुफरद' तथा छंद 49 में प्रयुक्त 'मुफरदह' शब्द मलिक मुफर्रह के ही द्योतक हैं। रणमल्ल छंद काव्य में जिस मल्लिक मुफर्रह सुल्तानी का वर्णन हुआ है, वह यही (मलिक मुफर्रह, निज़ामशाह सुल्तानी, फरहतुल मुल्क, रास्तीखान) है। इसी की लड़ाई के लिए यह काव्य लिखा गया है।[7]

यद्यपि रणमल्ल छंद में वर्णित युद्ध, जैसा कि प्रथम वर्ग के विद्वानों ने माना है, पाटण के सूबेदार झफरखान के साथ हुआ युद्ध ही है, पर द्वितीय वर्ग के विद्वानों द्वारा-मलिक्क, मुफरद, सुलतान, असपति, खुंदाळम, खान इत्यादि शब्दों के वास्तविक अर्थों को न जानने पर पूर्वोक्त कल्पित विभ्रम उत्पन्न हुआ है। अन्यथा अन्य ऐसा कोई कारण नहीं है, जिसके आधार पर इतिहास-प्रसिद्ध रणमल्ल तथा झफरखान के युद्ध के बारे में संदेह किया जाय। काव्य के हिन्दी भावार्थ का अवलोकन करने पर यह बात और भी सुस्पष्ट हो जाएगी।

सन् 1460 में उत्कीर्ण कुंभलगढ़ प्रशस्ति में इस अभिलेख-"जैतकर्ण (रणमल्ल के पिता) को मेवाड़ के महाराणा हम्मीर ने अधीन किया था और हम्मीर के पुत्र क्षेत्रपालसिंह ने झफरखान के दर्प को चूर करने वाले रणमल्ल को कैद किया था।"[8] - से यद्यपि रणमल्ल का मेवाड़ के महाराणा द्वारा अपमानित होना पाया जाता है,

1 सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य, पृ० 122
2 रणमल्ल छंद अने तेनो समय, पृ० 10
3 रास और रासान्वयी काव्य, पृ० 243-45
4 कविरचित भाग 1-2, पृ० 18-19
5 गुजराती साहित्यना स्वरूपो, पृ० 107
6 गुजराती साहित्य का इतिहास, पृ० 30
7 मो० सै० अबुझफर नदवी-रणमल्ल छंद ने तेनो समय, पृ० 10
8 बिबिलियोग्राफीका ईंडिका

परंतु रणमल्ल के विशेषण द्वारा यह स्पष्ट रूप से ध्वनित होता है कि रणमल्ल ने झफरखान को बुरी तरह से छकाया था। रणमल्ल की यह अभूतपूर्व विजय यदि प्रस्तुत काव्य का प्रेरणा-स्रोत रही हो तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है।

प्रस्तुत छंद के स्थान-स्थान पर रणमल्ल को 'वर वीर'[1] अथवा 'वर कमधज्ज'[2] जैसे श्रेष्ठ विशेषणों से विभूषित किया गया है तथा उसको श्रेष्ठ हिन्दू-धर्मरक्षक हम्मीर[3] तथा कान्हड़देव[4] की श्रेणी का शासक स्वीकारा है। यह एक तथ्य है जिसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि रणमल्ल उस काल का असाधारण स्वातन्त्र्यप्रेमी वीर था और उसकी लड़ाई का निमित्त केवल मात्र अपने राज्य का लोभ न होकर धार्मिक भी था। छंद में रणमल्ल को हिन्दू धर्म, ब्राह्मण, गाय, अबलाओं और बालकों का रक्षक बता कर इस तथ्य की पुष्टि की गई है।[5]

रणमल्ल का प्रतिद्वन्द्वी झफरखान की गजनी के शासक से कम धर्मान्ध न था। उसने भी सोमनाथ की प्रतिष्ठा को भंग किया था व गौ, ब्राह्मण, बालक और स्त्रियों को प्रताड़ित करता रहता था।[6] रणमल्ल ने संगठित रूप से इसका प्रतिवाद किया। उसने छत्तीस सजकुलों का संगठन किया तथा उसका नेतृत्व स्वयं ने सम्हाला। इस सद्कार्य पर स्वयं रणमल्ल को गर्व था।[7] रणमल्ल की इच्छा समग्र भारत से यवनशासनोच्छेद की थी।[8] तदनुरूप उसने प्रयत्न भी प्रारम्भ किये। विभिन्न प्रकार से तत्कालीन शासक को कष्ट देना उसका प्रधान कार्य था।[9] भाग्य ने भी उसका साथ दिया। दिल्ली की सल्तनत ज्यों-ज्यों कमजोर होती जाती थी, रणमल्ल व उसके अनुयायियों के उपद्रव बढ़ते जाते थे। सल्तनत की ओर से अंतिम आश्रय युद्ध का लिया गया और रणमल्ल तथा उसके साथियों को कुचल देने का निश्चय किया,[10] परन्तु उसका नतीजा भी विपरीत ही

1 छंद, 1
2 छंद, 54
3 छंद, 4
4 छंद, 62
5 छंद, 54-55
6 छंद, 39-41
7 छंद, 31
8 छंद, 70
9 छंद, 11-15
10 छंद, 16-17

निकला और झफरखान को मैदान छोड़ कर भागने के लिए विवश होना पड़ा।[1]

कुछ विद्वान (जिनमें मौ० नदवी प्रमुख हैं) इस युद्ध का फारसी तवारीखों में उल्लेख न होने के कारण इसे संदेह की दृष्टि से देखते हैं, परन्तु फारसी विद्वानों की यह परम्परा रही है कि जिस-जिस युद्ध में स्वयं बादशाह अथवा सल्तनत की ओर से नियुक्त किसी अधिकारी को मैदान छोड़ कर भागना पड़ा है, उसका उल्लेख तक नहीं करते थे। अद्यावधि ज्ञात तथ्यों से भी उपर्युक्त अभिमत की पुष्टि होती है।

ऐतिहासिक ग्रंथों में गुजरात के सूबेदार झफरखान द्वारा सन् 1393, 1398 और 1401 में ईडर पर तीन बार आक्रमण करने का उल्लेख मिलता है।[2] रणमल्ल छंद की पांचवीं आर्या में रणमल्ल के साथ तैमूर का उल्लेख होने के कारण प्रस्तुत काव्य का सर्जनकाल तैमूर के आक्रमण सन् 1397 के पश्चात् का ठहराता है। अतः सन् 1393 वाला आक्रमण इस काव्य का विषय नहीं माना जा सकता तथा सन् 1401 के आक्रमण के समय रणमल्ल ईडर को त्याग कर विशनगर की ओर चला गया था। इसलिए इस काव्य का वर्ण्य-विषय सन् 1398 वाला आक्रमण ही हो सकता है, जिसमें आक्रांता झफरखान को मैदान छोड़ कर भागना पड़ा था।

रणमल्ल के अन्य युद्ध

रणमल्ल छंद में रणमल्ल द्वारा झफरखान के विरुद्ध लड़े गए मुख्य युद्ध के अतिरिक्त अन्य युद्धों की जानकारी भी मिलती है[3], जिनमें रणमल्ल ने विजयश्री का वरण किया था-

रणमल्ल और झफरखान रूम

झफरखान फारसी बंगाल का रहने वाला था। इसका श्वसुर इसी प्रांत का नाजिम था। वह एकाएक शत्रुओं के हाथ से मारा गया। झफरखान वहां से दौड़ कर दिल्ली गया। बादशाह ने उसे नायब वजीर का पद दिया। तत्पश्चात् उसे गुजरात का नाजिम बना दिया। झफरखान ने लगभग आठ वर्ष तक शासन किया और सन् 1369 में चल बसा। झफरखान की मृत्यु के पश्चात् उसका बेटा दरियाखान गुजरात का हाकिम बना। उसे 'झफरखान रूम' का खिताब दिया गया। रणमल्ल छंद में रणमल्ल की स्वमुख

1 छंद, 56-61

2 श्री जोशी-ईडर राज्यनो इतिहास, पृ० 100-102

3 मौ. सै. नदवी-रणमल्ल अने तेनो समय, पृ० 17-19

उक्ति द्वारा इसी झफरखान के पराजित होने का उल्लेख किया गया है।[1] यह घटना सन् 1378 के आसपास की मानी जाती है।

रणमल्ल और शमसुद्दीन

शमसुद्दीन का पूरा नाम-झिया उल मुल्क मलिक शमसुद्दीन अबुरिजा था। इसकी नियुक्ति झफरखान के नायब के रूप में सन् 1378 में हुई थी। सम्भवत: सन् 1378 के आसपास इस नये नायब ने भी ईडर पर आक्रमण किया होगा और रणमल्ल के साथ युद्ध में मुंह की खाई होगी। रणमल्ल छंद के वर्णन से पता चलता है कि रणमल्ल एवं शमसुद्दीन का द्वन्द्व-युद्ध हुआ था और उसमें शमसुद्दीन परास्त होकर भाग गया था।[2]

रणमल्ल और मलिक मुफर्रह तथा भागर के यादव

रणमल्ल छंद के रचयिता ने श्रीमुख उक्ति द्वारा रणमल्ल का अन्य सेनापतियों के साथ युद्ध और उसमें विजयी होने का संकेत दिया है।[3] इससे ध्वनित होता है कि रणमल्ल उक्त सन् 1398 वाले युद्ध से पहले भी काफी लड़ाइयां लड़ चुका था और उनमें विजयी हुआ था। इनमें 'मल्लिक-मुफर्रह' और 'भागर देश' (कदाच् बागड़) के यादवों से लड़ी हुई लड़ाइयां विशेष उल्लेखनीय है।

यद्यपि छंद में मलिक्क मुफर्रह का स्पष्ट रूप से कहीं उल्लेख नहीं है, फिर भी यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि-अब मलिक्क मुफर्रह गुजरात का सूबेदार बन कर आया होगा तब उसने भी अपने पूर्ववर्ती सूबेदारों की परिपाटी को अपनाया होगा। ईडर हमेशा से ही सूबेदारों की आंख का कांटा बना हुआ था। वह अवश्य मलिक्क मुफर्रह की आंख में भी खटका होगा।

यह मलिक्क मुफर्रह सन् 1377 में गुजरात का सूबेदार बन कर आया था। इसका असली नाम रास्तीखान था। इसके पिता का नाम मलिक फत्ताहुलमुल्क था। यह फिरोजखान का गुलाम था। इसे अच्छे कार्य करने के उपलक्ष में मलिक्क मुफर्रह की उपाधि दी गई थी। इसने सन् 1377 से सन् 1391 तक शासन किया। अत: रणमल्ल और मुफर्रह का युद्ध इसी समय हुआ होगा।[4]

रणमल्ल ने ईडर और मेवाड़ के बीच 'भागर' प्रदेश के यादव-वंशीय शासक को

---

1 दल दारुण दफ्फरखान जयी, मिंई भग्गउ अग्गइ खग्गरइ। छंद 32

2 मिंइ संगरि समशुद्दीन नडी, पडिभग्गउ अंगो अंगि भिड़ी। छं. 33

3 मम मोडिय मंडि मलिक्क घणूं, हूं समरि विडारण मेच्छ तणूं। छं. 34

4 डा. शर्मा व डा. ओझा-रास और रासान्वयी काव्य, पृ० 245

युद्ध में पराजित करके अपने अधीन कर लिया था और उसकी राजधानी झारणगढ़ में पर्याप्त समय तक स्वयं ने निवास किया था। तत्पश्चात् एक सोलंकी पटावत को वहां रख कर स्वयं ईडर लौट आया।[1]

कुछ भ्रांतियां

रणमल्ल छंद की वर्णित युद्ध की तरह कुछ विद्वानों ने और भी तथ्यगण भ्रांतियां परिकल्पित की हैं-

रणमल्ल की विजय के सम्बन्ध में संदेह करते हुए मौ० सै० अबुझफर नदवी ने उल्लेख किया है कि "रणमल्ल छंद को पढ़ते समय थोड़ा प्रकाश डालने वाली एक अन्य घटना का उल्लेख मिलता है कि 'राजा की सहायता के लिए आया हुआ, राजा सांतल संभवइ पड्यो' यह राजपूताने के सांभर शहर का हाकिम था। यह कोई कम बात नहीं है। चांपानेर और ईडर के राजाओं के यहां उनसे पहले दो सौ वर्षों से यही परिपाटी चली आ रही थी कि वे बाहर के राजाओं की मदद लेकर गुजरात के हाकिमों से लड़ते थे। इससे गुजरात के सुल्तानों को अनेक बार मालवा, खानदेश और राजपूताना के दूसरे हाकिमों से अकारण ही लड़ाई लड़नी पड़ती थी। इससे ऐसा मालूम पड़ता है कि ईडर के राजा की फौज किले में से निकल कर बाहर के मैदान में लड़ने लगी तभी अकस्मात् पीछे से राजा सांतल की फौज भी आ पहुंची। परिणाम यह हुआ कि मलिक मुफर्रह की फौज दो दुश्मनों के बीच आ गई और इसी से उसकी हार हुई।[2] आश्चर्य तो इस बात का है कि मौ० सै० नदवी सा० ने सांतल को सांभर का हाकिम बताया है। जबकि वह जालौर के राजा कान्हड़दे का भतीजा था। इसके अतिरिक्त जो तथ्य उपर्युक्त उद्धरण में प्रस्तुत किए गए हैं, उनका रणमल्ल छंद में कहीं उल्लेख तक नहीं है। मौ०सै० नदवी द्वारा उल्लिखित (छंद 62-63 में) जालौर (स्वर्णगिरि) के चौहान शासक कान्हड़दे द्वारा मुहम्मद गजनवी के कब्जे में से सोमनाथ महादेव की मूर्ति को छुड़ा कर उसे पुनः प्रतिष्ठित करने का उल्लेख हुआ है।

एक अन्य ऐतिहासिक पात्र के विषय में जानकारी देते हुए श्री केशवराम काशीराम शास्त्री ने लिखा है कि-"अेक अन्य ऐतिहासिक पात्र के विषय में कवि जानकारी देता है। वह 'मुहडासिया और रहमानी' है। मीर रहमानी इस समय मोडासा में थाणेदार था। 'दामहराम करइ सुरताणी' ऐसे सुल्तान का वेतन खाकर कुछ भी नहीं कर सकता था।"[3] शास्त्री यदि उपर्युक्त उल्लेख करते समय मूल पाठ को अच्छी तरह से

1 श्री जोशी-ईडर राज्य नो इतिहास, पृ० 101

2 मौ० सै० नदवी-रणमल्ल छंद अने तेनो समय, पृ० 15-16

3 कविचरित, भाग 1-2, पृ० 18-19

देख लेते है तो उक्त भ्रांति की कोई सम्भावना नहीं थी। शास्त्रीजी द्वारा उद्धृत मूल पाठ, 'मुहडा सिया मीर रहमानी' है जिसका अर्थ होता है-(रणमल्ल ने) सिया रहमानी मीरों को पराजित कर दिया और वह सुल्तान के दामों (Tribute) को नष्ट कर रहा है। यदि मूल पाठ में 'मुहड़ाया और रहमानी' संशोधन (जो कि उचित प्रतीत होता है) स्वीकार कर लिया जाय तो ऊपर का अर्थ और भी अधिक सुस्पष्ट हो जाएगा।

□□□

रणमल्ल छंद की भाषा

रणमल्ल छंद की भाषा प्राचीन राजस्थानी है। इसे कुछ विद्वानों ने जूनी गुजराती भी कहा है। रणमल्ल छंद के सर्जन-काल में वर्तमान की तरह राजस्थान एवं गुजरात के प्रदेशों में भिन्नता नहीं थी। राजकीय प्रशासनिक सीमा-भेद को छोड़ कर सामाजिक एवं साहित्यिक दृष्टि से दोनों प्रदेश एक थे। सुदूर अणहिलपुर से अजमेर तक एक ही भाषा का प्रयोग होता था। वर्तमान तक उपलब्ध दोनों प्राचीन प्रदेशों का लिखित साहित्य एक ही है।

रणमल्ल छंद के रचयिता व्यास श्रीधर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश देशीय भाषा के विद्वान थे तथा विदेशी भाषा (फारसी) की भी उन्हें जानकारी थी। अत: उनकी कृति में उक्त सभी भाषाओं का प्रयोग न्यूनाधिक परिमाण में मिलना स्वाभाविक है। छंद की प्रथम दश आर्याएं विशुद्ध संस्कृत में हैं, तत्पश्चात् का वर्णन यद्यपि देशीय भाषा में हैं, परन्तु उसमें परिनिष्ठित प्राकृत अथवा अपभ्रंश की शब्दावली का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

स्वर विकार

अ : आ-असवार आसुर (असुर) अंस असलीइ।	छंद	25
ई : इ-ढोल गहिर (गंभीर) ढमकंत।	,,	22
उ : अ-बुल्लइ विरद (विरुद) बहुत।	,,	50
ए : इ-तु रणमल्ल इक्क (एक) नह बंदू।	,,	11
ओ : उ-हसि हुसियार (होशियार) हुया हल हल करि	,,	18

व्यंजन विकार

ख : ह-मूंछ सिहरि (शिखर) फरकंत।	,,	20
-तिम तिम ईडर सिहर (शिखर) वरि।	,,	22
ध : ह-निहुटि (निघुट) वाटि काढ गढ घल्लि।	,,	17
भ : ह-असुहउ (अशुभ) ईडरइ।	,,	20
- सुहड (सुभट्ट) सद्द संभळिवि रउद्दह।	,,	49
ध : ह-तिम तिम योगिनी रूहिर (रूधिर) रसि।	,,	49

श : ह–दहु (दश) दिसि फिरवि करि पुक्कारह।	,,	49
–दहु (दश) दिसि पंडरवेस पल्लट्टिय।	,,	17
ग : य–निसि खंभाइचि नयर (नगर) उध्रकइ।	,,	14
–तु गयणंगणि (गगनांगण) भाण न उग्गइ।	,,	29
–सायर (सागर) वेलि तरंग।	,,	51
द : य–मुझ सिर कमल मेच्छ पय (पद) लग्गइ।	,,	29
ट : ड–सुहड (सुभट) सद्द संभळिवि रउद्दह।	,,	49
ति : इ–जिम हम्मीर वीर सिंभरवइ (संभराधिपति)	,,	12
न : म–रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम (स्थान) चुक्कि।	,,	67
प : व–जिम हम्मीर वीर सिंभरवइ (संभराधिपति)	,,	12
ब : व–रे रणमल्ल धााड़ि जव (जब) संभळि।	,,	14
यु : जु–उल्लाळवि झालवि जुज्झ (युद्ध) कमालह।	,,	52
त्स : च्छ–मूंगळ मेच्छ मुइह मच्छर (मात्सर्य) भरि।	,,	18
द्ध : ज्झ–उल्लाळवि झालवि जुज्झ (युद्ध) कमालह।	,,	52
ध्य : ज्झि–मलिक मंत्र मज्झिम (मध्यम) निसि किद्धउ।	,,	27
ब्द : द्द–रउद्द सद्द (शब्द) आ समुद्द साहसिक सूरइ।	,,	41
म्ले : मे–मूंगळ मेच्छ (म्लेच्छ) मुहइ मच्छर भरि।	,,	18
द्र : द्द–रउद्द सद्द आसमुद्द (आसमुद्र) साहसिक सूरइ।	,,	41
द्रष्ट : दिट्ठ–गौरी दळि गाहवि दिट्ठ (द्रष्ट) दहदिसि।	,,	58
दुर्ग : दुग्ग–ईडर अडर दुग्ग (दुर्ग) तळ गायुं।	,,	46
दुर्जन : दुज्जण–दुज्जण–रुक्ख इक्क दावानुळ हयमर।	,,	57
र : X –सतिरि सहस (सहस्र) साहणवइ साहण।	,,	11
न : ण–पुण (पुन:) फुरमाण (फरमान) आण सुरताणी	,,	12
–लखि फुरमाण (फरमान) खान चल्लावि।	,,	16
–रहिउ हुई हैराण (हैरान) खुंदालम।	,,	16
–दुज्जण (दुर्जन) रुक्ख इक्क दावानळ हयमर।	,,	57
–वेढि करि गज्जणवइ (गजनीपति) असुरइ।	,,	62
स्कं : कं–तां कमधज्ज कंध (स्कंध) न धगड़ नमइ।	,,	30
स्त : त्थ–तूं हट्टि उट्ठवणीइ हट्ठ विलोह हत्थ (हस्त) लिज्जइ।	,,	
स्था : थ–आदर करि संकर थिर थप्पिय (स्थापिता)।	,,	63
स्था : ठा–रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम (स्थान) चुक्कि।	,,	67

स्थि : थि-आदर करि संकर थिर (स्थिर) थप्पिय।	छंद	63
ष्टि : ट्ठि-मुट्ठि (मुष्टि) दळ धल्लइ।	,,	26
ह्म : भ-बंभण (ब्राह्मण) बाल बंदि बहु कीज्जिइ।	,,	40
क्षि : खि-तु रणमलन इक्क नह खिति (क्षिति)।	,,	12
श, ष : स-सर्वत्र प्रयुक्त।		

रणमल्ल छंद की भाषा में जो सबसे बड़ी विशेषताएं उपलब्ध हैं वे हैं-विभक्ति कारक एवं कारकों के लिए सम्बन्ध सूचक अव्ययों अथवा परसर्गों का प्रयोग। यही विशेषताएं इस भाषा को प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा से पृथक प्रमाणित करती है। यद्यपि निर्विभक्तिक कारकों का प्रारम्भ अपभ्रंशोत्तरकालीन अवहट्ठ में हो गया था, परन्तु पश्चताद्वर्ती आर्यभाषाओं (विशेषकर राजस्थानी भाषा) में इसका प्रचलन बहुतायत से पाया जाता है। रणमल्ल छंद में अर्थ विभ्रम से बचने के लिए कवि ने जो सम्बन्ध-सूचक अव्ययों अथवा परसर्गों का व्यवहार किया है वह भी राजस्थानी भाषा के अव्ययों अथवा परसर्गों के अति निकट है। उदाहरणार्थ कुछ उद्धरण प्रस्तुत है-

(अ) निर्विभक्तिक कारक

कर्त्ता-फुक्कारि **मीर मल्लिक** मुफरद।	रणमल्ल छंद	19
-तिम तिम **रणमल्ल** रोस भरि।	,,	24
-गयु **खान** खुद नगतलि **चल्लिय।**	,,	26
-उच्चरहिं **सरस महुयर** झुणिउ।	सन्देश रासक	216

-**चारण** कहइ। -अचलदास खीचीरी वचिनका

-**देव दाणव** लड़ि मूआ। -राठौर रतनसिंघ महेशदासोतरी बचनिका

- जाणे वाद मांडियो जीपण, **वागहीण** वागेसरी।

-वेलि सिरी किसन रुकमणी री 3

-परूसै **जसोदा** जिमै **चक्रपाणी।**

-नागदमण 2

कर्म-थर थर **थाणदार** उरि कम्पइ।	-रणमल्ल छंद	13
-हेलां **लाखबंद** बुल्लावि।	,,	16
-अचल राज **चहुआण** समप्पिय।	,,	63
-**सिहि** चडिउ पिक्खि मायंद साह।	-सन्देश रासक-	212
-**हस्ती** मेलि **चाल्यउ।**	-अचलदास खीची री वचनिका	

-**कवि रजपूत** पोखिया काळै।

-वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेस दासोत री।

–**परमेसर** प्रणवि प्रणवि **सरसति** पुणि।
–वेलि सिरि क्रिसन रुकमणी री 1
–जाओ नागणी **नाग** वैगो जगाडो। –नागदमण 37

करण–

–पखरि **पक्खर** पवन पंखी। –रणमल्ल छंद 25
–सवि **रणमल्ल** करइ साह सिहुलि। ,, 38
–**जल** रहिय मेह संतविअ कांइ। –सन्देश रासक 118
–**विधि** अेणि गयो स्त्रग।
–बचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री।
–जाणे वाद मांडिया जीपण, वागहीण **वागेसरी।**
–वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 3
–गळै अघ्घ ओघां **खुरी खेह** ग्रेवा। –नागदमण 61

सम्बन्ध–

–**मूंछ** सिहरि फरंकत। –रणमल्ल छंद 20
–भुजबलि सबल **मुट्ठि दळ** घल्लई। ,, 26
–करी चाकरी **खान** कर जोड़िअ। ,, 28
–जइ **रणमल्ल** पास इम बुल्लइ। ,, 27
–हिव **पट्टण** पद्धरि धरि सुपयं। ,, 32
–तव पेक्खिसि मुह रणमल्ल बलं। ,, 35
–अंगिहिं तुह अलहंत धिट्ठ **करयल** फरिसु।
–संदेश रासक 191
–मुंह **ससि** ओलंग च–ा नावइ। –राउल वेल 23
–**कामणि** करग सु बाणं कामरा। –वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 23
–**धरधर** श्रृंग सधर सुपीन पयोधर। वही 25
–खत्री कद्दका **कंस** रैयत्त खासी। –नागदमण 74

अधिकरण–

–फुंगराई फूंफूं फार फारक **फौज** फरि फरिमाणियां। –रणमल्ल छंद 19
–पंडर वेस थया निब्भय **धर।** ,, 40
–जह पिम्म **विओइ** विसुंठ लयं हिययं। –संदेश रासक 115
–तूछे फूल तारे **मण** हारे। –राउल वेल 20–21
–**जीह जीह** नव नवो रस। –वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 5

–इसो आज ते कोण **भूलोक** आछे। –नागदमण 52

संबोधन–

–**अरियणदारण! दीन अभयकर!** –रणमल्ल छंद 40

–विछोह जोइ तेहि **नाथ !** ,, 41

–धा **कमधज्ज** धार करि लिज्जइ। ,, 40

–ता **पहिय** केम णिसि समए पाविज्जइ निव्वुइय तह णिद्दा।

–संदेश रासक 116

–पहिउ भणइ **कणयंगि** सयलु जं तुम्हि कहिउ। –वही 117

–क्यूं **बारहट!** –बचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री।

–**बळिबन्धण** मूझ स्याळ सिंध बळि।

–वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री। 59

–**प्राणी** वंछइ त वेलि पढि। –वही 278

–कहै कीजियै **कान्ह** भीरू विभागै। –नागदमण 9

(आ) सम्बन्ध सूचक अव्यय अथवा परसर्ग

कर्त्ता–

इं–**मिइं** संगरि समसुद्दीन नड़ी। –रणमल्ल छंद 33

–आरंभ **मैं** कियो जेणि उपायो। –वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 2

कर्म–

अं–इम बोल्लइ हठि तोलंत **हयं।** –रणमल्ल छंद 36

इ–चंचलि चडी चिहूं **दिसि** चंपइ। ,, 13

करण–

इ–**भुजबळि** सबल मुट्ठि दळ धल्लई। –रणमल्ल छंद 26

–**धसि** धगड़ायण धूंस धरन्तु। ,, 56

–**झड़पइ** चड़वड़ घगड़ चिड़ा। ,, 61

–गोरी **दळि** गाहवि। ,, 58

–जब हेजब **मुहि** फरियाद सुणी। ,, 37

–किरि कठचीत्र पूतळी निज **करि।**

–वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 2

अवि–हल एय्यार **हक्कारवि** बुल्लवि। –रणमल्ल छंद 26

–सिरि फुरमाण **धरवि** सुरताणी। ,, 28

करि–भड़हड़ **करि** सत्तिरि सहस भड़क्कइ। –रणमल्ल छंद 61

–मुख **करि** किसूं कहीजै माहव।

–वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 64

रसि–**असि रसि** गाह करइ गोरी दळि। –रणमल्ल छंद 57

–तिम तिम योगिनि **रुहिर रसि।** ,, 42

–जिम जिम लसकर **लोह रसि।** ,, 44

वडी–मरडी मूंछ **वडी** मुहि मंडइ। ,, 64

सम्प्रदान–

इ–संचरीय सक सुरताण साहण साहसी सवि **संगरइ**।–रणमल्ल छंद 19

–चमक्कि चल्लि रणमल्ल भल्ल फेरि **संगरि**। ,, 45

–हर **तिणि** वंदे गवरि हर। –वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 29

–सामि **कामि** भंजिअे देहा।

–वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री

छळि–वरकमधज्ज वीर सासन **छळि**। –रणमल्ल छंद 54

–बंभण बाल सुरहि अवला **छळि**। ,, 55

–छंट करइ छत्तीस **छळि**। ,, 60

–टीलो राज धरा **छळ** तोनूं।

–वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री

–जसवंत **छळि** मोने जुड़णि। –वही

अपादान–

सरिसु–असपति **सरिसु** विवाद। –रणमल्ल छंद 42

–पंडरवेस **सरिसु** रणि। ,, 58

–असपति **सरिसु** साह सिम बक्कइ। ,, 63

–मेच्छ **सरिसु** गहगाह न छंडइ। ,, 64

इ–वेढि करी गज्जणवइ **असुरइ** । ,, 62

सम्बन्ध–

इ–जब ऊठिसि हठि हक्कंत **रणि** । –रणमल्ल छंद 34

–जब चंपिसि ईडर **सिहरि** तलं। ,, 35

ह–गई अरदास पासि **सुरताण** । –रणमल्ल छंद 11

–तिम **रणमल्लह** रोस वसि। ,, 20

-छतीस **कुलह** बल करिसि घणुं। -रणमल्ल छंद 31
-उल्लाळवि झालवि जुज्झ **कमालह** । ,, 53
तणुं-पय मग्गिसु रा **हम्मीर तणुं** । ,, 31
-हूं समरि विडारण मेच्छ **तणुं** । ,, 34
-कहण **तणौ** तिणि **तणौ** कीरतन।
-वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 7
-रासौ रैणाअर **तणो** । -बचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोतरी
रइ-मिंइं भग्गउ अग्गइ **खग्गरइ** । -रणमल्ल छंद 12

अधिकरण-

इ-तिम कमधज्ज मूंछ **मुहि** मुरवइ। -रणमल्ल छंद 12
-**देसि** दिसि दिसि दड़वड़इ। ,, 21
-**सिरि** फुरमाण घरवि सुरताणी। ,, 28
-मल्लिक मंत्र मज्झिम **निसि** किद्धउ। ,, 27
-वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 6
-जिण दीध जनम **मुखि** दे जीहा। -वही 7
-गाजे **द्वारि** गयंदौ। -बचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेसदासोत री
आ-जि **जुद्धा** मुडुद्धा सनद्धा भजाड़ि। -रणमल्ल छंद 68
इय-**खित्तीय** रोस बलि। ,, 60
तलि-धंधलि धगड़ धरइ **धरणी तलि** । ,, 39
-ईडर अद्धर सिक्खरि रणथंभरि **तलि** । ,, 50
-खग्ग ताल जिम तोलइ **करतलि** । ,, 65
ह-**असह** चढि चल्लिउ। ,, 27

सर्वनाम

(1) हूं=मैं।

कर्त्ता-**हूँ** समरि विडारण मेच्छ तणु। -रणमल्ल छंद 34
कर्म -**मिइं** भग्गउ अग्गइ खग्गइ। ,, 32
-**मिइं** संगरि समसुद्दीन नड़ी। ,, 33
-**मम** मोडिय मंडि मल्लिक घणुं। ,, 34
सम्बन्ध-**मुझ** सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ। ,, 29
-तव पेक्खिसि **मुह** रणमल्ल बलं। ,, 35
-**मम** वरणसि मुणासिम दुत मुहि। ,, 35

(2) तूं=तू

कर्त्ता-**तूं** हट्ठि उट्ठवणीइ हट्ठवि। -रणमल्ल छंद 43

सम्बन्ध-**तु** रणमल्ल इक्क नह बंदू। ,, 11

(3) जि=जो

कर्त्ता-**जि** बुंबाअ बुंबा उलक्कि सळक्कि। इत्यादि

छंद 66, 67, 68, 69

(4) स=वह

कर्त्ता-तव हेजब फुरमाण **स** दिद्धउ। -रणमल्ल छंद 27

-रणमल्ल दिट्ठेण **ते** ठाम चुक्कि। ,, 37

सम्बन्ध-विछोहि जोई **तेह** नाथ। ,, 41

क्रिया तथा कृदन्त

वर्तमान काल-

अइ-**संचरइ** सक सुरताण साहसी सवि संगरइ। -रणमल्ल छंद 19

-**तोलइ** तरळ तुखार। ,, 24

-**पसरइ** पंडर वेस भयंकर। ,, 38

-धा कमधज्ज धारि करि **लिज्जइ** । ,, 40

-कचि कांठिहि **सोहइ**। लोकहं चीं दिठि मांड ची **खोहइ**।

-राउल वेल 7

-वसुधा थळि थळि जळ **वसइ** ।

-वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री, 197

रमै संग गोवाळियां रंग रातौ। -नागदमण 11

-सीह कवड्डी न **लहइ** । -अचळदास खीचीरी वचनिका

विशेष-छंद में प्रत्यक्ष दर्शनात्मक वर्णन होने से वर्तमान कालिक क्रियाओं की बहुतायत है, जिनमें 'अइ' प्रत्यांत क्रियाओं का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है।

ऊं-**पुणूं** रणरस जाण जरद्द जड़ी। -रणमल्ल छंद 31

-**वाखाणूं** कमधज्ज पुहवि राजा छत्रपति।

-वचनिका राठौड़ रतनसिंघ महेस दासोत री

-बल वो सादर **वरणवूं** । -नागदमण 1

अंत-मूंछ सिहरि **फुरकंत** । -रणमल्ल छंद 20

-किसन पधारया लोक **कहंति** ।

-वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 72

अंतु-पक्खारि पण्डवेस **भिडंतु,** धसि धगड़ायण धूंस **धरंतु** ।

-रणमल्ल छंद 56

भूतकाल-

अ-सकदळ दहु दिसि **दिद्ध** डहल्लिअ। -रणमल्ल छंद 26

अउ-मल्लिक मंत्र मज्झिम निसि **किद्धउ,** तव हेजण फरमाण स **दिद्धउ** ।

-रणमल्ल छंद 27

आ-हसि हुसियार **हुया** हल हल करि। -रणमल्ल छंद 18

-हय हेडवि सवि हेजब **गया** । ,, 36

-हयमर वेगि **गया** ईडर तळि । ,, 38

-वहि वल्लि मल्लिक सलाम **किया** । ,,

36

-पंडर वेस **थया** निब्भय घर। ,, 40

-केकाणां पाई सुगह **किया** ।

-वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 127

-केविया दळ तंडळ जेणि **किया** ।

-वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेशदासोत री 127

-विधि ऐणि **गयो** स्त्रग क्रीति वरे। -वही

-उळिगाणा आगी **हुवा** । -अचळदास खीचीरी वचनिका

-प्रभू घणां चा **पाड़िया** । -नागदमण 2

इ,ई-**गई** अरदास पासि सुरताणह। -रणमल्ल छंद 11

-लखि फुरमाण खान **चल्लावि** । ,, 16

-तब चमकि ढमक्कि मल्लिक **करी** । ,, 37

-धसि धाडिइ धायउ धूंस **धरी** । ,, 37

-जव हेजब मुहि फरियाद **सुणी** । ,, 37

-चमक्कि **चल्लि** रणमल्ल। ,, 45

-असपति दळ कोलाहल **संभळि** । ,, 55

-च्यारि जुगि कथा **रही** वेदव्यास वालमीक **कही** ।

-वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री

-स्वामी कथव **आयी** सुणण। -अचळदास खीचीरी वचनिका

-पुळी नै'र नीसार **आवी** प्रहंट्टै। -नागदमण 7

इउ-ईडर गढि अस्सइ चढि **चल्लिउ,** जइ रणमल्ल पासि इम **बुल्लिड** ।

-रणमल्ल छंद 56

-ताल **मिळिउ** हरि जंभ तणुं जिम। -रणमल्ल छंद 27

अउ-मिंइं **भग्गउ** अग्गइ खग्गरइ। ,, 32

उ-**गयु** खान खुद नग तळि चल्लिअ। ,, 26

-खान खवास खेलि बलि **धायु** । ,, 46

-ईडर अडर दुग्ग तळ **गाहयु** । ,, 46

अं-हय हय हुंकारवि हयमरि **चड़यं** । ,, 58

अंता-जि बक्का अरक्का सरक्का **बहन्ता** । ,, 69

-जि सब्बा सगब्बा झरब्बा **सहन्ता** । ,, 69

अंतिअ- हल हल बिगरी बिगरी **बोलंतिअ** । ,, 51

अंतु-पक्खरि पंडरवेस **भिड़ंतु** । ,, 56

-धसि धगड़ायण धूंस **धरंतु** । ,, 56

आणी-गह गुज्जार निमाज **कराणी** । ,, 48

विशेष- **'अइ' व 'अई' प्रत्यांत** भूतकालिक **क्रियाओं के रूप भी उपलब्ध हैं।**

भविष्यत् काल-

अइ,अई-मुझ सिर कमल मेच्छ पय **लग्गइ** तु गयणंगणि भाण न **उग्गई** ।

-रणमल्ल छंद 29

-जां अंबर पुडळि तरणि **रमइ,** तां कमधज्ज न धगड़ **नमइ** ।

-वरि वडवानळ तण झाळ **समइ,** पुणमेच्छन आपूं चास **किमइ** ।

-वही 30

ऊं-पुण मेच्छं न **आपूं** चास किमइ। -रणमल्ल छंद 30

इसि-मम **वरणिसि** मुणसिम दूत मुहि। ,, 35

-जब **चंपिसि** ईडर सिहरि तलं। ,, 35

-तव **पेक्खिसि** मुह रणमल्ल बलं। ,, 35

-जब **ऊठिसि** हठि हकंत रणि। ,, 34

-जब **मंडिसि** मुझ रणमल्ल समं। -रणमल्ल छंद 33

-तव **देखिसि** लसकरि सरिसु जमं। ,, 33

-तइ सउ हथियार पाविउ काम्वदेउ जंगही कांइ **करिसी** ।

-राउलवेल 32

-राए लगइ पड राड़वळि वीरजी **बखाणिसी** ।

-अचळदास खीची री वचनिका

-वात **रहिसी** । -वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री

-तरै आविजो **जागसी** जाम त्रीजै। -नागदमण 69

इसु-छत्तीस कुलह बल **करिसु** घणूं। -रणमल्ल छंद 31

-पय **मग्गिसु** रा हम्मीर तणूं। ,, 31

-नइ **विनड़िसु** सत्तिरि सहस सयं । ,, 32

-हिव **करिसु** धरा रणमल्ल मयं । ,, 36

किं कहिसु तासु जसु अहि थाको कहि-वेलि सिरी क्रिसन रुकमणी री 272

आज्ञार्थक-

इय-दहु दिसि पंडरवेस **पलट्टिय** । -रणमल्ल छंद 17

इ-निहुटि वाटि काटि गढ **घल्लि** । ,, 17

-बल बुल्लिय बल्लि मल्लिक **कहि** । ,,

35

अइ-धा कमधज्ज धार करि **लिज्जइ** । ,, 40

-मेच्छ लोड़ि **लिज्जइ** । ,, 41

-लोह हत्थइ **लिज्जइ** । ,, 43

-खोहि गाहव **किज्जइ** । ,, 43

संयुक्त-

-ईडर गढि अस्सइ **चढि चल्लिउ** । -रणमल्ल छंद 27

-मेच्छ **लोड़ि लिज्जइ** । ,, 41

-खोहि **गाहवि किज्जइ** । ,, 43

-दहु दिसि लिखी **करि पुक्कारह** । ,, 49

अव्यय-क्रिया विशेषण

(अ) कालवाचक

हिव=अभी-**हिव** पट्टणि पद्धरि घरि सुपयं। -रणमल्ल छंद 32

-**हिव** किरमाल पहारि ।	-रणमल्ल छंद	70
तव=तब-**तव** देखिसि लसकरि सरिसुं जमं।	,,	33
-**तव** न गणूं त्रण सुरताण तणि।	,,	34
-**तव** पेखिसि मुह रणमल्ल बलं।	,,	35
-**तव** चमक्कि ढमक्कि मल्लिक करी।	,,	37
जव=जब-रे रणमल्ल धाड़ि **जव** संभळि।	,,	14
-**जव** मंडसि मुझ रणमल्ल समं।	,,	33
-**जव** ऊठिसि हठि हक्कंत रणि।	,,	34
-**जव** चंपिसि ईडर सिहर तलं।	,,	35
-**जव** हेजब मुहि फरियाद सुणी।	,,	37
जां=जब तक-**जां** अंबर पुड़ तलि तरणी रमइ।	,,	30
तां=तब तक-**तां** कमधज्ज न धगड़ नमइ।	,,	30

(आ) स्थानवाचक-

अग्गई=आगे-मिइं भग्गउ **अग्गइ** खग्गरइ।	,,	32
जां=जहां पर-**जां** रणमल्ल रोस (इ) वसि उट्ठिय।	,,	64

परिमाणवाचक-

धणूं=बहुत-छत्तीस कुलह बल करिसु **घणूं** ।	,,	31
-मम मोडिय मंडि मल्लिक **घणूं** ।	,,	34
बहु=,,- **बहु** बलकाक करइ बाहु बलि।	,,	39
-बंभण बाल बंदि **बहु** किज्जइ।	,,	40
बहुत्त=,,-बुल्लइ विरद **बहुत्त** ।	,,	50
मफरद=एकाकी-फुकारि मीर मल्लिक **मुफरद** ।	,,	19
-धसमस धूंस करइ **मफरद्द** ।	,,	49
सवि=सब- साहसी **सवि** संगरइ।	,,	65
- अगर गरास दास **सवि** हेजब्ब गया।	,,	19
-हय हेडवि **सवि** हेजब्ब गया।	,,	28
-**सवि** रणमल्ल करइ साह सिहुलि।	,,	38

(ई) रीतिवाचक-

इम=इस प्रकार-जइ रणमल्ल पास **इम** बुल्लिउ।	,,	27
-**इम** बोलइ हठि तोलंत हयं।	,,	36

किमइ=किसी भी प्रकार	-पुण मेच्छ न आपूं चास **किमइ** ।	-रणमल्ल छंद	30
जिम=जिस प्रकार, जैसे	- **जिम** हम्मीर वीर सिंभरवइ।	,,	12
	-समुहरि **जिम** चककंत।	,,	20, 22
	-जळहर **जिम** सींगणि गुण गज़्जइ।	,,	39
	-ताल मिलिउ हरि जंभ तणउ **जिम** ।	,,	56
तिम=उसी प्रकार, वैसे	-**तिम** कमधज्ज मूंछ मुहि मुरवइ।	,,	12
	-**तिम** रणमल्लह रोस वसि।	,,	20
जिम-जिम=ज्यों-ज्यों	-**जिम जिम** कमधज चीतवई।	,,	42
	-**जिम जिम** लसकरि लोह रसि।	,,	44
तिम-तिम =वैसे-वैसे	-**तिम तिम** ईडर सिहर वरि।	,,	22
	-**तिम तिम** योगिनि रुहिर रसि।	,,	42
	-**तिम तिम** समरि कड़क्कि।	,,	44
निरंतर=लगातार	-नर पोक्कार करहि **निरंतर** ।	,,	38

(उ) अन्य-

न=नहीं	-तु गयणंगणि भाण **न** उग्गइ।	,,	29
	-पुण मेच्छ **न** आपूंचास किमइ।	,,	30
	-तव **न** गिणूं त्रण सुरताण तणि।	,,	34
नइ=और	- **नइ** विनड़िसु सत्तिरि सहस सयं।	,,	32
नह=नहीं	- तु रणमल्ल इक्क **नह** बंद्।	,,	11
वळ=पुन:	-**वळ** बुल्लिम वल्लि मल्लिक कहि।	,,	35

विशेषण

(अ) गुणवाचक

अभंग (55), असलीई (25), चंगी (66), तरळ (24), दारुण (32), दुद्दम (43), भयंकर (38), भारिअ (29), भड़ (52), मल्ल (53), टोडरमल (61)

(आ) संख्यावाचक

इक्क (11, 54, 57, 65, 70), त्रण (34), चिहूं (13), नव (54), दहु (49), सत्तिरि (11,49), छत्रीस (31, 60), सितरविसि (52), सहस (11, 49)

विशेष-पुरुष तथा निजवाचक सर्वनामों को छोड़ कर अन्य सर्वनामों का प्रयोग विशेषणवत् पाया जाता है।

रणमल्ल छंद का साहित्यिक महत्त्व

काव्यत्व

इतिहास एवं भाषा के सदृश साहित्य की दृष्टि से भी रणमल्ल छंद एक उत्कृष्ट कृति है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह खंडकाव्य की कोटि में आता है। खंडकाव्य भी प्रबन्ध-काव्य का ही एक भेद है, परन्तु इसमें महाकाव्य का सा विस्तार नहीं होता, बल्कि नायक के जीवन से सम्बन्धित किसी भी घटना का वर्णन रहता है। शास्त्रकारों ने काव्य का विश्लेषण करते हुए खंडकाव्य का लक्षण इस प्रकार दिया है-

खंडकाव्यं भवेत्काव्यस्येकदेशानुसारि च।[1]

अर्थात्-काव्य अथवा महाकाव्य के कतिपय लक्षणों से युक्त जो पद्य-प्रबन्ध है, उसे खंडकाव्य कहा करते हैं। रणमल्ल छंद में काव्य अथवा महाकाव्य की कतिपय विशेषताएं उपलब्ध हैं। यथा-

1. नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त एक कुलीन क्षत्रिय राजा है।
2. समस्त काव्य वीर रसान्वित है।
3. इसका कथानक विशुद्ध ऐतिहासिक है।
4. विजयश्री फल के रूप में प्राप्त है।
5. प्रारम्भ में नमस्कारात्मक एवं आशीर्वादात्मक मंगलाचरण विद्यमान है।
6. युद्ध का सांगोपांग वर्णन हुआ है।
7. काव्य का नामकरण नायक के नाम पर हुआ है।

इस प्रकार उपर्यङ्कित विवरण पर दृष्टिपात करने से रणमल्ल छंद का खंडकाव्यत्व असंदिग्ध प्रतीत होता है।

युग चित्रण

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि कवि तत्कालीन समाज का प्रतिनिधित्व करता है। वह समाज में परिव्याप्त अच्छाइयों एवं बुराइयों से प्रभावित होकर ही काव्य-प्रणयन के लिए अग्रसर होता हैं यदि वह कवि अपने युग की स्थिति से संतुष्ट होगा तो उसकी प्रशंसा करेगा, और असंतुष्ट होगा तो उसके प्रति क्षोभ प्रकट करेगा। इस प्रकार दोनों स्थितियों में कवि की कृति में युग का प्रतिबिम्ब अनिवार्य रूप से दृष्टिगोचर होगा।

---

1 विश्वनाथ-साहित्यदर्पण, षष्ठ परि०, 329

रणमल्ल छंद का सर्जनकाल सामाजिक, धार्मिक तथा साहित्यिक दृष्टि से संक्रांति-काल था। उस युग की परिस्थितियां और आदर्श वर्तमान की परिस्थितियों और आदर्शों से भिन्न थे। यद्यपि भारत की पर्याप्त भूमि पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था, फिर भी रणमल्ल जैसे स्वातन्त्र्य प्रेमी नरेशों की कमी नहीं थी। मुसलमान शासकों को यह असह्य था तथा वे इस प्रकार के शासकों को हर सम्भव स्ववश करने के लिए प्रयत्न करते रहते थे। उनकी इस राज्य-विस्तार-लिप्सा की शिकार, स्वातन्त्र्य-प्रेमी शासक भी प्रजा होती थी। छंद में युद्ध मदोन्मत्त मुगल सैनिकों द्वारा पीड़ित प्रजा का वर्णन हुआ है। प्रजाजन अपने संरक्षक शासक के समक्ष पुकार करते हैं-

बिबहर भरि बुंबारव बज्जइ, जळहर जिम सींगणि गुणगज्जई।
बहुबलकाक करइ बाहुब्बलि, धंधलि धगड़ धरइ धरणी तळि।।
अरियणदारण! दीन अभयकर! पंडरवेस थया निब्भय धर।
बंभण बाल बंदि बहु किज्जइ, धा कमधज्ज! धार करि लिज्जई।।

रउद्द सद्द आसमुद्द साहसिक्क सूरइ।
कठोर थोर घोर छोर पारसिक्क पूरइ।
अहंग गाम गेह गाहि, गालिबाल किज्जइ।
बिछोहि जोइ तेह नाथ! मेच्छ लोड़ि लिज्जइ।।

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि-तत्कालीन आतताई मुगल सैनिकों के लिए ग्राम व निवासों को जला देना, मंदिर व मठों को नष्ट कर देना, ब्राह्मण व अबलाओं को बंदी बना लेना तथा मारकाट करना एक सामान्य बात थी।

स्वातन्त्र्य प्रेमी हिन्दू शासक अपने राज्य-लोभ को गौण समझ कर गौ, ब्राह्मण, अबलाओं एवं संस्कृति की रक्षा को प्रधानता देते थे। छंद में स्थान-स्थान पर इस प्रवृत्ति का उल्लेख हुआ है। सीमित साधन होते हुए भी रणमल्ल के "मुझ सिर कमल मेच्छ पय नग्गइ, तु गयणङ्गणि भाण न उग्गइ" कथन में संस्कृति-पोषक तत्वों को देखा जा सकता है। इस प्रकार के शासक यथावसर मुगल-शासन से अनुशासित प्रजा को लूटना, विभिन्न स्थानों के थानेदारों को भगा देना तथा राजकीय कोष को लूट देना, अपना कर्त्तव्य समझते थे। छंद के प्रारम्भ में इसका वर्णन उपलब्ध है।

इस प्रकार रणमल्ल छंद के संक्षिप्त वर्णन में भी तत्कालीन युग की विभिन्न परिस्थितियों की झांकी दृष्टिगोचर होती है।

रस

रणमल्ल छंद में, एक युद्ध चरितात्मक काव्य होने के नाते, वीररस का पाया जाना स्वाभाविक ही है। परन्तु इसमें जिस प्रकार से वीररस की निष्पत्ति हुई है, अन्य काव्यों में दुर्लभ है। कथा का श्रीगणेश रणमल्ल के वीरतापूर्ण कृत्य के साथ होता है।

पाठक उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्कण्ठित होता हुआ आगे बढ़ता है, उसके साथ-साथ कथा भी अपने प्रबल वेग के साथ बढ़ती जाती है। अंततोगत्वा रणमल्ल की विजय-दुंदुभि और मुगलों के पलायन की दयनीय दशा के साथ रस परिपक्व होकर पाठक के अंतश्चेतन को आनंदित कर देता है और वह पाठक ऐसी अनुभूति करता है मानो यह कथानक काव्यरूप में नहीं बल्कि साक्षात् रूप से देख रहा है। वीररस के अतिरिक्त किसी भी प्रकार के रस को निष्पन्न न होने देना, कवि की अतिरिक्त विशेषता है।

अलंकार

रणमल्ल छंद में शब्दालंकार एवं अर्थालंकार दोनों तरह के अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। जिनमें शब्दालंकारों का बाहुल्य है। ऐसा कोई भी छंद नहीं है, जिसमें अलंकार का प्रयोग न हुआ हो, फिर भी कवि का अलंकारों को लाने के लिए दुराग्रह नहीं है। भाषा के प्रवाह में जितने भी अलंकार अनायास आ गए वे वे आ गए।

छेकानुप्रास : यह शब्दालंकार है। जहां अनेक वर्णों की अर्थात् व्यंजनों की एक बार स्वरूप और क्रम से आवृत्ति हो, वहां छेकानुप्रास होता है। इस अलंकार का छंद में सफल प्रयोग हुआ है।

फूंगराई फूं फूं फार फारक, फौज फरि फुरमाणियां।
हुंकार कर कड़ि शर झड़ि, करवि करि कम्माणियां।।19।।

वृत्यनुप्रास : यह भी शब्दालंकार है। जब अनेक व्यंजनों की स्वरूप मात्र से एक बार या अनेक बार समता हो या अनेक वर्णों की आवृत्ति स्वरूप और क्रम दोनों प्रकार से कई बार समता हो अथवा केवल एक वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हो तो वृत्युनुप्रास अलंकार होता है। यथा-

उदाहरण-

1. फुर फुरहिं लम्ब अलम्ब अम्बरि नेज निकर निरंतरं।
भर भरहिं भेरि भयङ्क भूंकर भरलि भूरि भयङ्कर।
दड़दड़ी दड़दड़ कारि दड़बड़ देसि दिसि दिसि दड़बड़इ।
सचरइ शक सुरताण साहण साहसी सवि सङ्करइ।।21।।

2. दम दम कार दमाम दमक्कइ, ढम ढम ढम ढम ढोल ढमक्कइ।
तरवर पंडरवेस पहट्टइ, तरतर तुरक पड़इ तलहट्टइ।।47।।

3. गोरीदल गाहवि दिट्ठ दहुद्दिसि गढि मढि गिरि गह्वरि गडियं।
हणहणि हकन्तउ हुं हुं हय हय हुंकारवि हयमरि चडियं।
धड़हड़तउ धड़ि कमधज्ज धरातलि धसि धगडायण धूंस धरइ।
ईडरवइ पंडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ।।58।।

अन्त्यानुप्रास : यह भी शब्दालंकार अन्त्यानुप्रास कहलाता है। इसके कई भेद होते हैं। रणमल्ल छंद में सर्वान्त्य, समानन्त्य और समविषमान्त्य अनुप्रासों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण सर्वत्र उपलब्ध है।

उपमा : यह अर्थालंकार है। जहां परस्पर भेद रहते हुए उपमेय का उपमान के साथ सादृश्य का वर्णन हो, वहां उपमालंकार होता है। इसके पूर्णोपमा और लुप्तोपमा दो भेद होते हैं।

उदाहरण–

1. जब मंडिसि मुझ रणमल्ल समं, तब देखिसि लसकरि सरिसु जमं।
–छं० 33

2. तुक्खार तार तत्तार तेजी तरल तिक्ख तुरङ्गमा। –छं० 25

3. जलहरि जिमि सिंगणि गुण गज्जइ। –छं० 39

रूपक : यह भी अर्थालंकार है, जहां उपमेय को कह कर उसमें उपमान का अभेद आरोपित–कल्पित हो, वहां रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण–

1.सींचाणउ रा कमधज्ज निरग्गल, झड़पइ चड़वड़ धगड़ चिड़ा।
भड़हड़ करि सत्तिरि सरस भड़कई, कमधज भुज भड़वाय झड़ा।–छं० 61

2.कमधज उदयगिरि मंडण सविता। –छं० 53

3.असि मारवि रूम्ब रणायरि, रगडिअ भंजइ धगड़ महाभड़या। –छं० 59

4.तिभूआ खांडीया घड़ी दंड किज्जि। –छं० 68

5.मुझ सिर कमल मेच्छ पय लगई। –छं० 29

6.पड़क्कि वागि पक्कड़न्त मारि मीर मक्कड़ा। –छं० 45

अतिशयोक्ति : यह भी अर्थालंकार है। जहां किसी वस्तु का बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किया जाय, वहां 'अतिशयोक्ति' अलंकार होता है।

उदाहरण–

1. हयखुरतल रेणइ रवि छाहिउ। –छं० 46 इत्यादि

छंद

रणमल्ल छंद के सत्तर पद्यों में–10 आर्या, 27 चुप्पई, 5 सारसी, 5 दूहू, 8 सिंहविलोकित, 2 पंचचामर, 4 हांढकी, 4 दुमिल, 4 भुजंगप्रयात और एक छप्पय। इस प्रकार दश प्रकार के मात्रिक, वार्णिक एवं मिश्र जातीय छंदों का प्रयोग हुआ है।

आर्या : यह अपभ्रंश वाङ्मय में सर्वाधिक व्यवहृत होने वाला छंद है। इस छंद के पूर्वार्द्ध में सात गण [चतुष्कल] होते हैं। किन्तु विषम स्थान पर कदापि जगण नहीं होता। षष्ठ स्थान में जगण अथवा नगण एक लघु का विकल्प होता है। यदि षष्ठ स्थान में चतुर्लघु रूप गण हो तो उस गण के द्वितीय लघु रूप से प्रथम गण के अंत में यति होती है, परन्तु षष्ठगण से परे सप्तम गण चतुर्लघुरूप हो तो उसके प्रथम लघु के पूर्व विराम दिया जाता है। द्वितीय अर्द्ध का ऐसा लक्षण है कि यदि पंचम गण चतुर्लघु रूप हो तो पंचम गण के पूर्व यति करनी चाहिए। किञ्च आर्या के उत्तरार्द्ध में नियम से षष्ठगण एक लघु एक मात्रा रूप ही होता है, चतुर्मात्रिक नहीं। इतना ही पूर्वार्द्ध से उत्तरार्द्ध की विशेषता समझें।[1]

आर्या छंद को ही प्राकृत पैंगलम् में गाथा कहा गया है जिसके लक्षण भी उपर्युक्त आर्या के लक्षणों के समान ही हैं।[2]

हिन्दी भाषा के कवियों ने इस छंद का प्रयोग प्रायः कम ही किया जाता है फिर भी सर्वथा अनप्रयुक्त नहीं है। उदाहरणार्थ रामचरित उपाध्याय की यह आर्या ली जा सकती है।

1 ।2 ।3 ।4 ।5 ।6 ज. । 7 ग.

कवि निर्धन भी होकर शठ की सेवा कभी न करता है।

1 ।2 ।3 ।4 ।5 ।6 ल. । 7 ग.

रत्नाकर में जाकर, हंस कभी क्या विचरता है ।।

चुप्पइ : यह तैथिक जाति का सम मात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह मात्राएं होती है। अंत में एक गुरु तथा एक लघु होता है।

विशेष-प्रस्तुत काव्य में प्रयुक्त चुप्पइ चरणाकुलक की तरह प्रयुक्त हुई है। प्राचीन कवि 16 मात्रा के छंद को भी चुप्पई कहते थे।

---

1 लक्ष्मै तत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे जः।
षष्ठोऽयं न लघूवा प्रथमेऽर्ध नियतमार्यायाः।।
षष्ठे द्वितीयलात्परके न्ले मुखलाच्चसयति पद नियमः।
चरमेऽर्ध पंचमके तस्मादिह भवति षष्ठोलः।।

वृत्तरत्नाकर, 2 अ० श्लो० 1-2

2 पढमं बारह मत्ता बीए अट्ठारहेहिं संजुत्ता।
जह पढमं तीअं दह पंच विहूसिया गाहा।।
सत्तगणा दीहंता जो ण लहू छट्ठ णेह जो विसमे।
तह गाहे वि अ अद्धे छट्ठं लहुअं वियाणेहु।।

प्राकृत पैंगलम्, 1.54.56

सारसी : यह नाक्षत्रिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में सत्ताइस मात्राएं होती हैं। अंत में एक गुरु तथा एक एक लघु होता है तथा सोलह ग्यारह पर यति होती है। इस छंद का अपर नाम 'कबीर' भी है।

दूहू : यह अर्द्ध सम मात्रिक छंद है। अपभ्रंश-काल से लेकर वर्तमान-काल तक के कवियों ने इस छंद का सर्वाधिक व्यवहार किया है। इसके प्रथम चरण में तेरह मात्रा, द्वितीय चरण से ग्यारह मात्रा फिर तीसरे और चौथे चरण में क्रमश: तेरह और ग्यारह मात्राएं होती हैं।[1] इसके विषम चरणों के आदि में जगण नहीं होना चाहिए।

सिंहविलोकित : यह संस्कारी जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में विप्रगण (चतुष्कल सर्वलघु) तथा सगण धर कर (16 मात्राएं पूरी करते हैं) इस छंद के किसी भी चरण में जगण, भगण या कर्ण (द्वि गुरु चतुष्कल) कभी नहीं रखने चाहिए।[2]

पंचचामर : यह अष्टि: जाति का समवार्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमश: जगण, रगण पुन: जगण, रगण के उपरांत एक जगण और गुरु होता है।[3]

हांढकी : यह महायौगिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में 29 मात्राएं होती है। अंत में एक गुरु और एक लघु रहता है। दस, आठ और ग्यारह पर यति होने पर इसे 'मरहट्टा' कहा जाता है।

दुमिल : यह लाक्षणिक जाति का सममात्रावृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में 32 मात्राएं होती हैं। अंत में कर्ण (द्विगुरु चतुष्कल) होता है। दस, आठ और चौदह पर यति होती है। पद में विषम स्थान पर कर्ण (गुरुद्वय) तथा बीच में विप्र

---

1 तेरह मत्ता पढ़म पअ, पुणु एआरह देह।
पुणु तेरह एआरहइ, दोहा लक्षण एह।।

–प्राकृत पैंगलम्, 1.78

2 गण विप्प सगण धरि पअह पअं,
भण सिंहअलोअण छंद बरं।
गुणिगण मण बुज्झहु णाअ भणा,
णहि जगणु ण भगणु ण कण्ण गण।

–प्राकृत पैंगलम्, 1.83

3 जरौ जरौ जगाविदं वदन्ति पंचचामरम्।

–वृत्तरत्नाकर, 3.89

(सर्वलघु चतुष्कल) तथा पदाति (सामान्य चतुष्कल) दिया जाता है।[1]

भुजंगप्रयात : यह जगती जाति का समवार्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं।[2]

छप्पय : इस छंद के आदि में 'रोला' के चार पाद और अंत में उल्लाला के पूर्व दल तथा उत्तर दल होते हैं।[3] प्रस्तुत छप्पय में 28 मात्राओं का उल्लाला प्रयुक्त हुआ है।

विशेष : प्रस्तुत काव्य में छंदों में कुछ स्थानों पर नियम सम्बन्धी शिथिलता भी दृष्टिगोचर होती है।

वर्णन-शैली

रणमल्ल छंद एक वीर-रसात्मक चरित-काव्य है। रणमल्ल के अदम्य पौरुष का वर्णन ही कवि को अभीष्ट है। फलतः वह इस काव्य में वर्णनात्मक शैली अपना कर चला है, जिसमें रसानुकूल ओज तथा अविरल वेग, गुण सहज ही आ गए हैं। कवि का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। कवि के हृदयगत भावों का अनुसरण करती हुई सी प्रतीत होती है। काव्य-कलामर्मज्ञ होने के कारण कवि ने अपने नायक के चरित्र-बल की रक्षार्थ उसके प्रतिद्वंद्वी के बल-चित्रण में भी कोताही नहीं बरती है। यद्यपि कवि ने इस काव्य को वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है, परन्तु पत्र-प्रसंग एवं परिसंवादों के प्रयोग ने इस शैली में अद्वितीय छटा उत्पन्न कर दी है। इस अल्पकाय काव्य में दो पत्र एवं आठ परिसंवाद आए हैं। यथा-

पत्र-छंद 11 से 15 तथा 17

---

1 तीस दुइ मत्तह एरि संजुत्तह बुहअण राय भणति णरा।
विसम त्तिअ ठामहि एरिस भाअहि पअ पअ दीसइ कण्ण धरा।
ता दह पढमं ट्टावे अट्ठ अं तीअ चउद्दह किअ णिलओ,
जो एरिस छंदे तिहुअणवंदे सो जण बुज्झउ दुम्मिल ओ।।
दह वसु चउदह विरइ करु, विसम कण्ण गण देह।
अंतर विप्प पइक्क गण, दुम्मिल छंद कहेहु।।

-प्राकृत पैंगलम्, 1.196, 197

2 भुजङ्ग प्रयातं भवेद्यैश्चतुभि:।

-वृत्तरत्नाकर, अ० 3 श्लो० 55

3 रोला के पद चार, मत्त चौबीस धारिए।
उल्लाला पद दोय, अंत मांहीं सुधारिए।।

-श्री परमेश्वरानन्द : छन्द-शिक्षा, पृ० 70

परिसंवाद-

1. खान ऐयार संवाद। छं० 26
2. दूत रणमल्ल ,, । छं० 28
3. रणमल्ल दूत ,, । छं० 29-35
4. मलिक दूत ,, । छं० 36
5. प्रजा रणमल्ल ,, । छं० 38-41
6. योगिनियों द्वारा प्रदत्त शिक्षा। छं० 43
7. शाह सिम बादशाह संवाद। छं० 63-69
8. रणमल्ल का स्वकथन। छं० 70

अनुरणनात्मक शब्द प्रयोग :

रणमल्ल छंद की अन्य काव्यगत विशेषताओं के साथ-साथ उसके अनुसरणनात्मक शब्द प्रयोग भी एक विशेषता है। ध्वन्यात्मक शब्दानुरणन से वर्णन, चित्रोपम साकार बन जाता है। अपभ्रंश-कालीन अन्य काव्य-कृतियों में भी इस प्रकार के प्रयोग दृष्टिगोचर होते हैं,[1] परन्तु उनमें रणमल्ल छंद जैसा नाद-सौंदर्य एवं प्रवाह नहीं मिलता। कवि ने विभिन्न वीरों की हुंकारों के अतिरिक्त युद्ध-वाद्यों एवं शस्त्रास्त्र प्रवाह की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म ध्वनियों का उल्लेख किया है, जो कवि की सूक्ष्मावलोकन दृष्टि का परिचायक है।

युद्ध वाद्यों के शब्द :

[अ] ढोल : गहरि ढोल ढमकत। छं० 22
: ढम ढम ढम ढम कर द्रूंकर ढोल ढोली जंगिया। -छं० 23
: ढम ढम ढम ढम ढोल ढमक्कई। -47

---

1. [अ] तड़ि तड़यड़इ पड़इ घण गज्जइ।
जाणइ राम हो सरण पवज्जइ। -म०पु०

[आ] तोड़इ तड़त्ति तणु बंधणाइं मोड़इ कडत्ति हड्डइ घणइं।
फाड़इ चड़ति चम्मइं चलइं घुट्टइ धड़ति सोणिय जलइं।।
-जस० च०, 2. 37. 34

[इ] झिरिमिरि झिरिमिरि झिरमिरि ए मेहा वरसंति।
-सिरि थूलि भद्द फाग

[ई] खुर खुर खुदि खुदि महि घघर रव कलइ,
ण ण ण ण गिदि करि तुरअ चले।
-प्राकृत पैंगलम्,

[आ] भेरि : भर भरहि भेरि भयंक भूंकर भरलि भूरि भयंकरं। छं० 21

[इ] दमामा : दम दम करि दमाम दमक्कई। छं० 47

[ई] धौंसा : धसमस धूंस करइ मफरद्दह। -छं० 49

[उ] दड़वड़ी : दड़ दड़ी दड़ दड़ कारि दड़बड़ देसि दिसि दिसि दड़ वड़ई। छं० 19

[ऊ] काहल : कलकलहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थर थरई। -छं० 23

वीर हक्क-

[अ] बिबहर बुम्बअ बुम्बअ बक्कइ। छं० 13

[आ] हसि हुसियार हुया हल हल करि। छं० 18

[इ] हुंकार कर कड़ि करइ सर झड़ी करवि करि कम्माणियां। छं० 19

[ई] फुक्कारि मीर मल्लिक मुफरद मूंछ मरड़ी मच्छरइ।

[उ] बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ। छं० 29

[ऊ] हल हल बिगरी बिगरी बोलन्तिअ नीर लहरि छिलन्त। छं० 50

[ए] हण हणि मुणसिम भणइ अंसभय। छं० 56

मुगल सैन्य

मद भींभळ सेरबचा बंगाली मूंगळ महामल्लिक।
ईडर अद्धर सिक्खरि रणथम्भरि तळि तरवरइ तुरक्क।
हक्कारवि विकट बहकटि चल्लइ बुल्लइ विरद बहुत।
सुरताण सरिस सिलार सिपाही सवि मिळि समरि पुहुत्त।। छं० 50

रणमल्ल प्रयाण

गोरीदळ गाहवि दिट्ठ दहुद्दिसि मढि गिरि गह्वरि गडियं।
हण हणि हज्कन्तउ हुं हुं हय हय हुंकारवि हयमरि चडियं।
धड़हड़ तउ धाडि कमधज्ज धरातलि धगड़ायण धूंस धरइ।
ईडरवह पंडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ।। छं० 58

युद्ध वर्णन

उल्लालवि झालवि जुज्झ कमालह लथ बथि लोथि लडंत।
धारुक्कटि धारि धगड़ धर धसमसि धसमसि धुब्ब पडंत।
कमधज्ज उदयगिरि मंडण सविता झलमल मल्ल भिडंत।
धुरि धुरि धसि धूंस धरइ धगड़ायणि धरवरि रुण्ड रुलन्त।। छं० 53

यवन सैन्य पलायन

जि बुम्बाअ बुम्बा उलक्कि सलक्कि, जि बक्कि बहक्कि लहक्कि चमक्कि।
जि चङ्गी तुरङ्गी तरङ्गि चडन्ता, रणमल्ल दिट्ठेण दीणं दडन्ता।।

जि मुद्दा समुद्दा सदा रुद्द सद्दा, जि बुम्बाल चुम्बाल बंगाल बन्दा।
जि जुज्झार तुक्खार क माल मुक्कि, रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम चुक्कि।।
जि रुक्का मलिक्का बलक्का कपाड़ी, जि जुद्धा मुडुद्धा सनद्धा भजाड़ी।
तिभूआ खांडीया धड़ी दंड किज्जि, रणमल्ल दिट्ठि मुंहि धास लिज्जि।।
जि बक्का अरक्का सरक्का बहन्ता, जि सब्बा सगब्बा झरब्बा सहन्ता।
जि जुज्झार उज्जार हज्जार चल्लि, रणमल्ल दिट्ठि मुहि धास धल्लि।।
- छं० 66, 67, 68, 69

उपसंहार

रणमल्ल छंद तत्कालीन ऐतिहासिक तथ्यों पर सम्यक् प्रकाश डालता है। यह मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा लज्जावश अथवा अन्य किन्हीं कारणों से छुपाई हुई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का पूर्ण परिचय देता है। इसके द्वारा साहित्य की छंद संज्ञक विधा अधिक बलवती हुई है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से यह अपभ्रंश तथा आधुनिक आर्य-भाषा (राजस्थानी-गुजराती) शृंखला को जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण बलय है। साहित्य जगत इस कृति के एक सटीक संस्करण की बहुत समय से आवश्यकता अनुभूत कर रहा था, जिसे भा. वि.मं. शोध-प्रतिष्ठान, बीकानेर द्वारा मूर्तरूप दिया गया है।

इस कृति की अन्य प्रति नहीं मिलने के कारण 'गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी' द्वारा प्रकाशित रा.ब.बा. केशवलाल ह. ध्रुव के पाठ को आधारस्वरूप मानने के लिए विवश होना पड़ा है, फिर भी पाठांशों के अन्वय परम्परानुमोदित शैली, शब्दार्थ तथा भावार्थ के द्वारा पाठकों को रचयिता के भावों तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है। छंद के मूल पाठ को टिप्पणी में दे दिया गया है। इस प्रयत्न को सफल बनाने में मुनि जिनविजय जी एवं श्री हरिबल्लभ चु. भायाणी के प्रोत्साहन, संस्था के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण पारीक के निर्देशन, आचार्य श्री नरोत्तमदास स्वामी के सुझावों तथा श्री अगरचन्द नाहटा, श्री सौभाग्यसिंह शेखावत एवं श्री सूर्यशंकर पारीक के सहयोग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मैं इन सभी महानुभावों का हृदय से आभार स्वीकार करता हूँ।

-मूलचन्द 'प्राणेश'

आर्या

शंकर-गुरु-गणनाथान्,
नत्वा वर-वीर-छंद-आरम्भे।
कवयेऽहं रणमल्लं,
प्रतिमल्लं यवन-भूपस्य।।1।।

मैं (कवि श्रीधर) श्रेष्ठ वीरचरित्र के प्रारम्भ में भगवान शिव, गुरु (एवं) गणपति को नमस्कार करके यवन-राजा के प्रतिद्वंद्वी रणमल्ल का (चरित्र) वर्णन करता हूं।।1।।

छत्राधिप-मद-हर्ता,
कर्ता कदनस्य समर-कर्तृणाम्।
वीर-जयश्री-धर्ता,
रणमल्लो जयति, भू-भर्ता ।।2।।

युद्ध करने वालों का नाश करने वाले, छत्रपतियों के दर्प हरने वाले, वीरों की विजय-श्री को धारण करने वाले पृथ्वी के पति रणमल्ल की जय हो।।2।।

यम-सदनं प्रतिनीता:,
सीता-रमणेन दानवा: स्फीता:।
अधुना कमधज-मल्लो,
रणमल्लस् तत्र तान् नयति ।।3।।

सीता के पति रामचन्द्र ने विस्तार पाये हुए राक्षसों को यमलोक पहुंचाया था। अब उन (राक्षस स्वरूप यवनों) को राठौड़ वीर रणमल्ल वहां (यमलोक में) पहुंचाता है।।3।।

पाठ भेद-

1 शीर्षक रसवृत छंद है। नाथं, युवन।

2 कदन सबल कर्तानाम्।

3 शीता, दानवास्फीता।

हम्मीरेण त्वरितं,
चरितं सुरताण-फोज-संहरणम्।
कुरुत इदानीमेको,
वरवीरस् त्वेव रणमल्लः ।।4।।

(जिस प्रकार) हम्मीर ने शीघ्रतापूर्वक सुलतान की सेना का संहार किया (उसी प्रकार) इस समय एक-मात्र वीर रणमल्ल ही करता है।।4।।

दिल्लीपति परिभूतौ,
तद् ददृशे दृश्यते च बाहुबलम्।
शकशल्ये रणमल्ले,
यमतुल्ये तिमिरलिङ्गे यत् ।।5।।

दिल्लीपति के पराभव में यम के समान तैमूरलंग में जो पराक्रम देखा गया था, वही (पराक्रम) यवनों के लिए कंटक रूप रणमल्ल में देखा जा सकता है।।5।।

कति कारयन्ति भूपा,
भुवि यूपान् केऽपि वापिकाः कूपान्।
एको ननु पुनरास्ते,
रणमल्लो घोरि कारयिता ।।6।।

कितने ही राजा पृथ्वी पर यज्ञस्तंभ बनवाते हैं और कितने ही (राजा) बावड़ियां और कूप बनवाते हैं, किन्तु (यवनों के लिए) घोरें बनवाने वाला एक रणमल्ल ही है।।6।।

यदि न भवति रणमल्लः,
प्रतिमल्लः पादशाह-कटकानाम्।
विक्रीयन्ते धगड़ैर्,
बाजारे गुर्जरा-भूपाः ।।7।।

यदि बादशाह की सेनाओं का प्रतिद्वंद्वी रणमल्ल न होता (तो) यवन, गुजरात के राजाओं को बाजार में बेचते।।7।।

सुभट-शतैरति विकटं,
पटु करटिघटाभिरुत्कटं कटकम्।

---

4 हमरेण, संहरणे, कुरुते तदिदानी वर वीर स्त्ववेक एव।
5 परिहरणे तदृपे, सल्ले, लिङ्गेच।
6 कूपाः
7 x ।

तन्नटयति रणमल्लो,

रणभुवि का वैरिणां गणना ।।8।।

जो सेना, सैकड़ों योद्धाओं के कारण विकट और (युद्ध में) दक्ष हाथियों के समूह से उन्मत्त है, उसको भी रणमल्ल युद्धभूमि में घायल कर देता है। उसके लिए, युद्धभूमि में सामान्य शत्रुओं की क्या गिनती है?।।8।।

अनवरतं भरत-रसं,

सरसैः सह रत-रसं समं स्त्रीभिः।

वीर-रसं सह वीरैर्,

विलासयत्येष रणमल्लः ।।9।।

यह रणमल्ल रसिकों के साथ नव रसों को, स्त्रियों के साथ सुरत रस को तथा वीरों के साथ वीर रस को आमोद-प्रमोद करवाता है।।9।।

खल-कमला गुरु-हरणं,

पर-वरणं समर-डम्बरारम्भे।

शिव शिव रणमल्लोऽयं,

शकदल-मद-मर्दनो जयति।।10।।

युद्ध के आरम्भ में अपने श्रेष्ठ वीरों का निर्वाचन करने वाले, शत्रुओं की राज्यश्री का महान हरण करने वाले तथा शक-समूह को नष्ट करने वाले इस रणमल्ल की जय हो।।10।।

॥ चुप्पइ ॥

सतिरि सहस साहणवइ साहण,

गई अरदास पासि सुरताणह।

कणगरु कोष लीध हरि हिंदू,

तु रणमल्ल इक्क नह बंदू।।11।।

सतरह सहस्र सेनाधिपति के शासन से सुलतान के पास प्रार्थना की गई कि-हिन्दू (राजा) रणमल्ल ने धान्य का बहुत बड़ा (राजकीय) कोष लूट लिया है और यह अकेला (रणमल्ल) ही तुम्हारी सेवा करना स्वीकार नहीं करता है।।11।।

---

8 मुभतटेरति, पटुश।

9 सुरतरसं समरसं समं, विससन् स एक एव।

10-11 इन दोनों के बीच में यही श्लोक नर वीर पाठांतर से ।। की संख्या देकर पुनः लिखा है।

11 शीर्षक चुप्पइ नहीं दिया गया है। साहणावै कणगरु किद्ध सिद्ध सह हिन्दू, तू।

पुण फुरमाण आण सुरताणइ (णी),
नहि रणमल्ल गणइ रणताणइ (णी)।
जिम हम्मीर वीर सिम्भरवइ,
तिम कमधज्ज मूंछ मुहि मुरवइ।।12।।

सुलतान के पास पुनः आया कि-रणमल्ल युद्ध-भय की परवाह नहीं करता था तथा जिस प्रकार सांभरपति (चौहान) हम्मीर (मूंछों पर ताव दिया करता था उसी प्रकार) (यह) कमधज्ज वीर (रणमल्ल) मूंछें मरोड़ता है।।12।।

चंचलि चड़ी चिहू दिसि चंपइ,
थर थर थाणदार उर कंपइ।
कमधज करि धरि लोह लहक्कइ,
बिबहर बुबंअ बुबंह बक्कइ।।12।।

(जब यह रणमल्ल) घोड़े पर सवार होकर चारों दिशाओं कों दबाता है। (तब) थानेदारों का हृदय थर्र-थर्र कांपने लगता है और (यह) कमधज वीर हाथ में तलवार लेकर झपटता है (तो) यवन बुंबअ (तोबा-तोबा) करने लगते हैं।।13।।

निसि खंभाइच नयर उध्रकइ,
धूंधळि धूंस पड़इ धूलक्कइ।
प्रह पुक्कार पड़इ (पढइं) पट्टण तळि,
रे रणमल्ल धाड़ि जब संभळि।।14।।

(यह) रणमल्ल सायंकाल में खंभाइच नगर में (प्रविष्ट होकर) हलचल उत्पन्न कर देता है, धुंधले समय में धूलका नामक नगर में (इसका) नगारे पर डंका पड़ता है और प्रातःकाल के समय जब रणमल्ल डाकू के (आने का समाचार) सुनाई देता है (तब) पाटण की तलहटी में पुकार मच जाती है।।14।।

मुहुड़ा (सि) या मीर रहमाणी,
दाम हराम करइ सुरताणी।
माल हलाल खान, खिजमत्ती,
तु रणमल्ल इक्क नह खित्ती।।15।।

---

12 पण, गणइ, हिम्मीर, संभरविइ, कमधज मुछ, मरवै।

13 चडि चाउ द्दिसि चंपि, थिर थिर, अरि, कंपइ, लहक्किइ, बिबहरि बूंब-बूंब बहक्किइ।

14 खभनयर उध्रकिइ धूंधलि धुंस पडीइ धुलक्किह, पोकार पडिइ तव।

15 मुहढासिया मीर रजाणी, करिइ, खजमत्ती तू, ए नह।

(इस रणमल्ल ने) अनेक यवन वीरों को पराजित कर दिया है और सुलतान के धन को नष्ट कर रहा है। (यह) खान के माल-जायदाद को अपनी संपत्ति समझ रहा है तथा वह एक ही पृथ्वी पर तुम्हारी सेवा स्वीकार नहीं कर रहा है।।15।।

इक रणमल्ल राय सुणि आलमि,
रहिउ हुई हैराण खुंदाळम।
हेलां लाखबंद बुल्लावि,
लखि फुरमाण खान चल्लावि।।16।।

समग्र जगत में एकमात्र राजा रणमल्ल को (स्वतंत्र) सुन कर बादशाह आश्चर्यचकित हो गया। उसने तत्काल कासिद को बुलवाया और उसे (अपना) फरमान देकर खान के पास भेजा।।16।।

हय गय कटक थाट उल्लट्टिय,
दहु दिसि पंडरवेस पलट्टिय।
निहुटि वाटि काढ गढ घल्लि,
करुपराण रैयत रणमल्लि।।17।।

(फरमान में उल्लेख था कि) रणमल्ल की रैयत पर दशों दिशाओं में यवन सैन्य, अश्वदल एवं हस्तीदल भेज कर आक्रमण करो और गढ का गुप्त मार्ग खोज कर उसे नष्ट कर दो।।17।।

ईडर भणी भींच सुरताणी,
फूं फूं कार फिरई रहमानी।
मूंगल मेच्छ मुहइ मच्छर भरि,
हसि हुसियार हुया हल-हल करि।।18।।

(इस प्रकार का आदेशपत्र प्राप्त करके) सुलतान के यवन वीर फुफकारते हुए ईडर को लक्ष्य बनाकर (इधर-उधर) घूमने लगे और कई मुगल जातीय यवन मात्सर्यभाव युक्त मुंह से हंसते हुए सावधान हुए तथा चलो-चलो करने लगे।।18।।

।। सारसी ।।

फूंगराई फूंफूंफार फारक फौज फरि फुरमाणियां।
हुंकार कर कड़ी करइ सर झड़ि करवि करि कम्माणियां।

---

16 आलम हैहराण रहिउ खूंदाळम, हेलअ, बोलावीय, चल्लाविय।
17 दहुं, नहुटि, घल्लिउ, रैयति करु पराण रणमल्लह।
18 सुरताणि य, फिरिय, रहमाणी य, मुंगल मुंह मिछ मछर, हुसीयार होया।

फुक्कारि मीर मल्लिक मुफरद, मूंछ मरड़ी मच्छरइ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।19।।

यवन-सैन्य में यवनाधिपति की फराहती हुई बहुत सी ध्वजाएं और फुफकारती हुई आज्ञाएं प्रसारित हुईं। (जिनको सुनकर यवनवीर) हुंकार करते हुए, हाथों में धनुष धारण करके शर वर्षा करने लगे। (कुछ) यवन सरदार मूंछों पर ताव देते हुए अकेले ही मत्सरित होने लगे। (इस प्रकार) सुलतान की चतुर्विध चंचल सैन्य युद्धार्थ चली।।19।।

॥ दूहू ॥

साहस वसि सुरताण दळ, समुहरि जिम चमकंत।
तिम रणमल्लह रोस वसि, मूंछ सिहरि फुरकंत।।20।।

शीघ्रता करने वाली सुलतान की सैन्य का अग्रभाग ज्योंही प्रत्यक्ष हुआ, त्योंही रणमल्ल की मूंछों के शिखर रोष के कारण फरकने लगे।।20।।

॥ सारसी ॥

फुरफुरहि लंब अलंब अंबरि नेज निकर निरंतर।
भरभरहि भेरि भयंक भू कर भरळि भूरि भयंकरं।
दड़दड़ी दड़दड़ कारि दड़वड़ देसि दिसि दिसि दड़वड़इ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।21।।

(जब) शक सुलतान की चतुर्विध चंचल सैन्य युद्धार्थ चली, (तब उसमें) आकाश के अन्दर छोटी-बड़ी पताकाओं का समूह लगातार फहर रहा था। भेरी की भर-भर करती हुई भयंकर ध्वनि और दुड़वड़ी की दड़ दड़ करती हुई ध्वनि देश की दसों दिशाओं में हो रही थी।।21।।

---

19 छंद इतना ही शीर्षक है, नाम नहीं दिया गया है। फुंगराय फुरफुर, करि फुरमाणियां, बाण कर जड़ि, कमाणया, फुकारि, मलिक्र मुरडीय मच्छरे, संचरिय, साहणसेन, शिव शिव संगरे।

20 शीर्षक आर्या दिया हुआ है। समहरि जेम, तिम रणमल्ल मुंछ।

21 छंद का नाम नहीं दिया गया है। निरंतरा, भरभरहिं, भयंकरा दड़वडीय दड़वडकारि देस दवडिय दह दिशे, संचरिय, सेन शिव शिव संगरे।

॥ दूहू ॥

साहस वसि सुलतान दळ, समुंहरि जिम दमकंत।
तिम तिम ईड़र सिहर वरि, ढोल गहिर ढमकंत।।22।।

शीघ्रता करने वाली सुलतान की सैन्य का अग्र भाग ज्यों-ज्यों स्पष्ट होता जा रहा था, त्यों-त्यों ईडर के शिखर पर गंभीर ध्वनि से ढोल बज रहे थे।।22।।

॥ सारसी ॥

ढम ढमइ ढम ढम कर ढूंकर ढोल ढोली जंगिया।
सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरस रसि समरंगिया।
कळकळहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरथरइ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।23।।

(जब) शक सुलतान की चतुर्विध चंचल सैन्य युद्धार्थ चली, (तब उसके अन्दर) ढोली जंगी ढोलों को ढमाढम-ढमाढम बजा रहे थे। शहनाइयां युद्ध के स्वर में बज रही थीं। (उसके) अग्रभाग में स्थित युद्धरस-सिक्त वीर प्रसन्न हो रहे थे (और) काहल की कर्कश ध्वनि तथा प्रत्यंचाओं की टंकारों से कोमल (हृदय) कायर थर्रा रहे थे।।23।।

॥ दूहू ॥

जिम जिम लसकर उध्रसइ, करी नि बुं बुं कार।
तिम तिम रणमल्ल रोस भरि, तोलइ तरल तुखार।।24।।

ज्यों-ज्यों (सुलतान) सेना नबीं-नबीं शब्दोच्चारण करते हुए (ईडर की ओर) अग्रसर हो रही थी, त्यों-त्यों सरोष रणमल्ल अपने घोड़े की जांच कर रहा था।।24।।

---

22 शीर्षक आर्या दिया गया है। समहरि, चमकन्ति, सिहरतलि, गुहिर ढमकंति।

23 शीर्षक में छंद का नाम नहीं दिया गया है। ढमढमीयकार, ढीली जङ्गया, करहिं समहरि ससर सर सरणाइयां, कलकलिहिं, कलिरव कमल कायर धूजए, सेन शिव शिव संगरे।

24 उध्रसिह करि, रणमल्ल, तोलिइ।

॥ सारसी ॥

तुक्खार तार ततार तेजी तरल तिक्ख तुरंगमा।
पक्खरिय पक्खर पवन पंखी पसरि पसरि निरुप्पमा।
असवार आसुर अंस असलीइ असणिअ असुहउ (ड) ईडरह।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ॥25॥

(जब) शक सुलतान की चतुर्विध चंचल सैन्य युद्धार्थ चली, (तब उसमें) तार देश के तुखार और तत्तार देश के तेजी नामक चंचल तथा तीक्ष्ण, कवचों से सुसज्जित एवं पवन के समान वेग वाले घोड़े थे। वे पक्षियों के समान फैल रहे थे। (उन पर) ईडर के लिए अशुभकारी वज्रस्वरूप यवन सवार थे॥25॥

॥ चुप्पइ ॥

हल ऐयार हकारिव बुल्लइ,
भुजबळि सबळ मुट्ठिदळ घल्लइ।
गयु खान खुद नगतळि चल्लिय,
सकदळ दुहु दिसि दिद्ध डहल्लिअ॥26॥

खान स्वयं पहाड़ की तलहट्टी में गया। यवन सैन्य ने (ईडर के) दोनों ओर घेरा डाल दिया। (तदुपरांत) खान ने अपने एय्यारों को सम्बोधित करते हुए कहा-(वीरो!) मुट्ठी भर (ईडर की) सैन्य को अपने भुजबल से नष्ट कर दो॥26॥

मलिक मंत्र मज्झिम निसि किद्धउ,
तव हेजव फुरमाण स दिद्धउ।
ईडरगढि अस्सइ चढि (डि) चल्लिउ,
जइ रणमल्ल पासि इम बुल्लिउ॥27॥

---

25 शीर्षक पर छंद का नाम नहीं दिया गया है। तोखार, तेजी य, तिख पष्परीय पष्षर पंखि पसरीय पवन, अस लीय, ईडरे, सेन शिव शिव संगरे।

26 शीर्षक पर चुप्पई नहीं दिया गया है। बुल्लिइ, मुंठि, षदगतलि चल्लिय, दहुं दिसि, डहल्लीय।

27 अव हीं चढि चल्लु, जई, बुल्लउ।

(तत्पश्चात् खान ने) मलिक से मध्यरात्रि में मन्त्रणा की। (उसी के अनुसार) पत्रवाहक को आज्ञापत्र लिख कर दिया। (वह पत्रवाहक) अश्वारूढ़ होकर ईडरगढ़ की ओर चला और रणमल्ल के पास जाकर इस प्रकार कहने लगा।।27।।

सिरि फुरमाण धरवि सुरताणी,
हय गय (धर दय) हाल माल दीवाणी।
अगर-गरास दास सवि छोड़िअ,
करि चाकरी खान कर जोड़िअ।।28।।

(हे रणमल्ल! तुम) सुलतानी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए वर्तमानकालिक शासन, हाथी, घोड़े, ग्राम, सेवक आदि सभी कुछ छोड़ कर (मात्र एक) खान की सेवा-चाकरी करबद्ध होकर करो।।28।।

रा असि सरिसु बाहु उठ भारिअ,
बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ।
मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ,
तु गयणंग (म) णि भाण न उग्गइ।।29।।

राजा (रणमल्ल) की असि सहित विशाल भुजा आवेश के कारण तन गई। (उसने) दूत को सम्बोधित करते हुए कहा-(यदि) मेरा मस्तक रूपी कमल (उस) यवन के पैरों पर पड़ेगा तो गगनांगण में सूर्य उदित नहीं होगा।।29।।

।। सिंहविलोकित ।।

जां अंबर पुड़ तळि तरणि रमइ,
तां कमधज कंध न धगड़ नमइ।
वरि वड़वानळ तण झाळ समइ,
पुण मेच्छ न आपूं चास किमइ।।30।।

---

28 सुरताणी य, दय दय, दीवाणी य, सब छोड़िय किरि, जोड़ि य।

29 रा नहीं है। असिवर, उब्भारीय, बोलिई, हेजब्ब-हक्कारीय, सिरि, लग्गिइ, उग्गिइ।

30 शीर्षक पर छंद का नाम नहीं दिया गया है। तरणी तपिइ; नमिइ, वडनानल झाल शमिइ, तु मेछ, किमिइ।

जब तक गगनांगण में सूर्य क्रीड़ा करता रहेगा, तब तक (इस रणमल्ल) राठौर के स्कंध (उस) यवन के समक्ष नहीं झुकेंगे। भले ही बड़वानल की लपटों का शमन हो जाय पर (मैं) किसी भी प्रकार से यवनों को पृथ्वी प्रदान नहीं करूंगा।।30।।

पुणु (पुण) रणरस जाण जरद्द जड़ी,
गुण सींगणी खंची खंती चड़ी।
छत्तीस कुलह बल करिसि (सु) घणुं,
पय मग्गिसिरा हम्मीर हम्मीर तणुं।।31।।

(मैं) कहता हूं कि-(यदि) युद्धोन्मत्त होकर (क्षत्रिय वीरों ने) कवच धारण कर लिए और (उनके) शृंगणी-धनुषों की प्रत्यंचाएं चढ़ गईं (तो) छत्तीस कुलों के (क्षत्रिय) अत्यधिक शक्ति लगा देंगे और (वे) (यवनों को) राव हम्मीर का क्षीर प्रदान करेंगे। अर्थात् जिस प्रकार राव हम्मीर ने यवन सैनिकों को मृत्यु के घाट उतार दिया था उसी प्रकार हमारे क्षत्रिय वीर भी यवनों को मृत्यु के घाट उतार देंगे।।31।।

दळ दारुण दफ्फर खान जयी,
मिइं भग्गउ अग्गइ खग्ग रयि।
हिव पट्टण पद्धरि धरि सुपयं,
नइ विनड़िसु सत्तिरि सहस सयं।।32।।

विजयी दफ्फर खान के दारुण-दल को मैंने (अपनी) खड्ग के सामने भगा दिया था। अब (तुम देखना) पाटण को नष्ट करके, (उसके) शासक को पकड़ कर तथा (उसके) सतरह सहस्र सैनिकों को स्ववश कर लूंगा।।32।।

मिंइ संगरि समसुद्दीन नड़ी,
पड़ि भग्गउ अंगो अंगि भिड़ी।
जव मंडिसि मुझ रणमल्ल समं,
तव देखिसि लसकर सरिस जमं।।33।।

मैंने युद्ध में शमशुद्दीन को स्ववश कर लिया था तथा (वह मेरे साथ) परस्पर युद्ध में (पराङ्मुख होकर) भाग पड़ा था। जब (खान) मेरे समक्ष (युद्ध के लिए)

---

31 सींगणि पंचमि छत्रीस, तणूं माग्गिसि रा हम्मीर पणूं।
32 दफरखान जवे; भग्गु अग्गि खग्ग रवे, हव, धरिसु बलं; सहस दल।
33 सम्मसदीन, पड़ि भग्गु, भडी, दाखिसि, लसकर।

तत्पर होगा, तब उसकी सेना (मुझे) क्रुद्ध यमराज के समान देखेगी। अर्थात् यवन सैनिक मुझे देखकर भय-भीत हो जाएंगे।।33।।

मम मोड़िय मंडि मलिक्क घणुं,
हुं समरि विडारण मेच्छ तणुं।
जव उठिसि हठि हक्कंत रणि,
तब न गणूं त्रण सुरताण तणि।।34।।

मैंने युद्ध-तत्पर अनेक मलिकों को परास्त किया है। मैं (तो) युद्ध-स्थल में यवनों को तितर-बितर करने वाला (ही) हूं। जब मैं युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाऊंगा तब (यह तो एक ही सुलतान है) मैं तीन-तीन सुलतानों की शक्ति को भी कुछ नही समझूंगा।।34।।

बळ बुल्लिम वल्लि मलिक्क कहि,
मम वरणिसि मुण (ा) सिम दुत मुहि।
जब चंपिसि ईडर सहरि तळं,
तब पेक्खिसि मुह रणमल्ल बळं।।35।।

(रणमल्ल ने) पुनः इस प्रकार कहा-(हे दूत! तुम) अपने संरक्षक मलिक से मेरा कथन उचित प्रकार से वर्णन कर देना। (साथ-साथ यह भी कह देना कि) जब तुम ईडर की तलहट्टी को दबाओगे तब मुझ रणमल्ल के (वास्तविक) पराक्रम को देखोगे।।35।।

हय हेडवि सवि हेजब्ब गया,
वहि वल्लि मलिक्क सलाम किया।
हिव करिसु धरा रणमल्लं मयं,
इम बोल्लइ हठि तोलंत हयं।।36।।

सभी दूत अपने घोड़ों को चला कर गए। जाकर अपने संरक्षक मलिक को सलाम किया। (तत्पश्चात् बोले)-(खुदाबंद!) रणमल्ल (तो) अपने घोड़े की जांच करता हुआ, इस प्रकार कह रहा था कि-अब (अतिशीघ्र ही) समग्र पृथ्वी को रणमल्लमय कर दूंगा। अर्थात् यवनों के शासन को समूल विनष्ट करके ही

---

34 (मोडिम), मेछ, रणे, सुरताणमणे।

35 बोलि, कहइ, मनवरलिसि बरविसि बहुत मुहिइ, पेखिसि मूं।

36 गहवल्लि, बोलिइ।

छोड़ूंगा।।36।।

नर केसरी ईडर सिहरि धणी,
जव हेजब मुहि फरियाद सुणी।
तव चमकि ढमक्कि मलिक्क करी,
धसि धाड़िइ धायउ धूंस धरी।।37।।

ईडरनगराधिपति नरकेशरी (रणमल्ल) का कथन जब (मलिक ने) दूत के मुंह से सुना, तब वह अपने नक्कारों पर डंका देकर (ईडर प्रदेश में) लूटने के लिए चल पड़ा।।37।।

।। चुप्पइ ।।

पसरइ वंडरवेस भयंकर,
नर पोक्कारहि करहि निरंतर।
हयमर वेगि गया ईडर तळि,
सवि रणमल्ल करइ साह सिहुली।।38।।

भयंकर यवन (लुटेरे) (ईडर प्रदेश में) फैलने लगे। (उनके उत्पीड़न से) प्रजाजन (त्रस्त होकर) निरंतर आर्त्तनाद करने लगे। (कुछ लोग) अश्ववेग से ईडर पहुंचे और रणमल्ल से सहायता की पुकार करने लगे।।38।।

बिबहर भरि बुंबारव वज्जइ,
जळहर जिम सींगणि गुण गज्जइ।
बहु बलकाक करइ बाहुब्बळि,
धंधळि धगड़ धरइ धरणी तळि।।39।।

(हे रणमल्ल!) यवन भरि तथा बुंबारव बजाते हैं। (उनके) धनुषों की प्रत्यंचाएं मेघ के समान गर्जन कर रही है। बहुत से बलकाक (बलख देशीय यवन) अपना ाहुबल प्रदर्शित कर रहे हैं। (इस प्रकार) उन्होंने पृथ्वी पर धुंध मचा रखी है।।39।।

---

7 शुरकेसरि, सिहरतणी, फरीआद, टमक्कि, मलिकि, धसी, धायु धुंस।

8 शीर्षक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है। पसरीय, पोकार करिहिं, करइ सहसा हुळि।

39 वज्जिइ, गज्जिइ, करिइ बाहुब्बलि, धूंधड़ि, धार धार लिज्जिइ।

अरियण दारण! दीन अभयकर,
पंडरवेस थया निब्भय धर।
बंभण बाळ बदि बहु किज्जइ,
धा कमधज्ज धार करि लिज्जइ।।40।।

हे शत्रु विदारक! हे दीन अभयकारी! इस भू-भाग पर यवन बहुत ही निर्भय हो गए है। (उन्होंने) बहुत से ब्राह्मण एवं अबलाओं को बन्दी बना लिया है। हे कमधज (आप) चलिए (और) (उन यवनों से) युद्ध करके (ब्राह्मण एवं अबलाओं को) बंधन-मुक्त कराइए।।40।।

।। पंचचामर ।।

रउद्द सद्द आसमुद्द साहसिक्क सूरइ,
कठोर थोर घोर छोर पारसिक्क पूरइ।
अहंग गाम गेह गाहि गालिबाल किज्जइ,
विछोहि जोइ तेह नाथ! मेच्छ लोड़ि लिज्जइ।।41।।

अत्याचारी यवन वीरों की शब्द-ध्वनि समुद्र पर्यन्त (प्रसारित) हो रही है। निष्ठुर एवं तस्कर पारस देशीय यवन (समग्र प्रदेश में) व्याप्त हो रहे हैं। (वे) यवन हमारे घर व ग्रामों को नष्ट कर रहे हैं। (अतः) हे स्वामी! (आप) (हमारे) वियोग को ध्यान में रखते हुए यवनों का मंथन करके, उन (बंदियों) की लौटा लाइए।।41।।

।। दूहू ।।

जिम जिम कमधज चीतवइ, असपति सरिसु विवाद।
तिम तिम योगिनी रुहिर रसि, रत्ता करइ प्रसाद।।42।।

ज्यों-ज्यों कमधज (रणमल्ल) बादशाह के साथ युद्ध करने का चिंतन कर रहा था, त्यों-त्यों योगनियां मत्त होकर (पूर्व संचित) रुधिर से प्रसाद ग्रहण कर रही थी।।42।।

---

40 अरीयण शरण, थया नि भयंकर, किज्जिइ, धार धर लिज्जिइ।

41 शीर्षक पर छंद का नाम नहीं दिया गया है। रवद्द, साहसीक सूरया, कठोर चोर छोर घोर पारसीक पूरया। अहङ्ग गाम गाह गेय बाल-गाल किज्जए, ताह तेह मेछ, लिंज्जए।

42 शीर्षक नहीं दिया गया है। चीतविइ, करिइ।

॥ सारसी ॥

परसादि बक्षि दिगन्त योगिनि जय जयारव अंबरि।
उछक्कि छक्कि दियंत सिक्खा वीर धीर धरावरि।
दुद्दम्भ मेच्छ विछोह रोहअ खोहि गाहवि किज्जइ।
तूं हट्टि उट्ठवणीइ हट्ठवि लोह हत्थ लिज्जइ।।43।।

दिग-दिगन्तर की योगिनियों को प्रसाद दीजिए। (ऐसा कहते हुए) (वे योगनियां) आकाश में जय-जयकार करने लगी और अत्यन्त तृप्त होकर पृथ्वी के श्रेष्ठ वीर तथा धीर (रणमल्ल) को शिक्षा देने लगीं है-(हे रणमल्ल) दुर्दम्य यवन, क्षोभपूर्वक आक्रमण करके (प्रजा को) नष्ट कर रहे हैं। (अतः) तुम (उन्हें) पराजित करने के लिए (अपने) हाथ में शस्त्र धारण करो।।43।।

॥ दूहू ॥

जिम जिम लसकर लोह रसि, लोड़इ सासन, लक्खि।
ईडरवइ चउसइ चड़इ, तिम तिम समरि कड़क्कि।।44।।

ज्यों-ज्यों सैनिक समूह (अपने) शस्त्र-बल से (यवन) राज्यों के मंथन का विचार कर रहा था, (उसे) जान कर त्यों-त्यों ईडराधिपति (रणमल्ल) की सहायतार्थ योगनियां कड़कती हुई चढ़ीं।।44।।

॥ पंचचामर ॥

कड़क्कि भूंछ भींछ मेच्छ मल्ल मोलि मुग्गरि।
चमक्कि चल्लि रणमल्ल भल फेरि सगरि।
धमक्कि धार छोडि धान छंडि धाड़ि धग्गड़ा।
पड़कि वागि (वाटि) पक्कड़ंत मारि मीर मक्कड़ा।।45।।

---

43 शीर्षक नहीं दिया गया है। प्रसाद लक्ष दियंति, उछक्कि उट्ठि, सिखा वीर धार धरातले, दुट्ठ मिछ छोहि जोइ खोहि गात्त किज्जए, निहट्ठि उट्ठि रच्छ उडण लोह हत्थि लिज्जिए।

44 शीर्षक आर्या है। लोड़ि, लछि, ईडरवै चउ सिइं चड़िउ, कड़छि।

45 शीर्षक पर छंद का नाम नहीं दिया गया है। कड़छि मुंछ मोलि मल्ल मेछ भींछ मोगरे, रणमल्ल, संगरे, धड़कि धार धाड़ि छोडि धान छोड़ि धूंबड़ा, पवित चित पकड़ंति मंकड़ा।

यवन सैन्य में योद्धा कड़क रहे थे। रणमल्ल (अपने) भाले को घुमाता हुआ युद्ध के लिए चला। (उसके) शस्त्रों की धमक सुनकर यवन सैनिकों ने अन्न खाना और लूट-खसोट करना छोड़ दिया। (वह रणमल्ल) (उन) यवन सरदार रूपी मर्कटों को डंके की चोट पकड़ लेता था।।45।।

।। चुप्पइ ।।

हय खुर तळ रैणइ रवि छाहिउ,
समुहर भरि ईडरवइ आइउ।
खान खवास खेलि बलि धायु,
ईडर अडर दुग्ग तळ गायु।।46।।

अश्व-पद-रज से सूर्य आच्छादित हो गया था। सेना के अग्रभाग में स्थित ईडराधिपति (रणमल्ल) आया। (उसने) खेल-खेल में ही खवासखान को पकड़ लिया तथा (उसे) ईडर के अभेद्य दुर्ग की तलहट्टी में पछाड़ा।।46।।

दम-दम करि (कार) दमाम दमक्कइ,
ढम-ढम ढम-ढम ढोल ढमक्कइ।
तरवर पंडरवेस पहट्टइ,
तर-तर तुरक पड़इ तलहट्टइ।।47।।

दम-दम शब्द करते हुए नगाड़े तथा ढम-ढम शब्द करते हुए ढोल बज रहे थे। यवन (सैनिक) मैदान से ईडर की तलहट्टी में त्वरित गति से प्रवेश कर रहे थे।।47।।

विसर विरंग बंग रव पसरइ,
रहि रहिमान मनन्तरि समरइ।
गह गुज्जारि निमाज कराणी,
हयमर फोज फिरइ सुरताणी।।48।।

कुरूप यवनों की बांग की विसर-ध्वनि फैल रही थी। (वे) मन के अन्दर

---

46 शीर्षक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है। ताल, रेणी, तव समहर, आयु, तलिआयु।

47 दमाम दमक्कीय, ढमक्कीय, पड़िइ तलहट्टीय।

48 पसरीय, समरीय, कराणीय, फिरिइ सुरताणीय।

रहमान का स्मरण कर रहे थे। (उन्होंने) प्रार्थना स्वरूप नमाज पढ़ी (तब तक) सुलतान की अश्वसेना घूम रही थी।।48।।

सत्तिरि सहस सहिय सिल्लारह,
दहु दिसि फिरवि करि पुक्कारह।
सुहड़ सद्द संभळिवि रउद्दह,
धसमस धूंस करइ मफरद्दह।।49।।

(सुलतान के) सतरस सहस्त्र योद्धा स्वरक्षार्थ दशों दिशाओं में चिल्लाते हुए फिर रहे थे और (साथ ही) सुभट्टों के शब्दों को सुन कर (वे) अकेले-अकेले धौंसा भी बजा रहे थे।।49।।

।। हांढ़की ।।

मद भींभळ सेरबचा बंगाली मूंगळ महामलिक्क।
ईडर अद्धर सिक्खरि रणथम्भरि तळि तरवरइ तुरक्क।
हक्कारवि विक्कट बहकटि चल्लइ बुल्लइ विरद बहुत्त।
सुरताण सरिस सिल्लार सिपाही सवि मिळि समरि पुहुत्त।।50।।

मद-विह्वल शेरबचा तथा बंगाली यवन सरदार ईडर के ऊंचे शिखरों के मध्य तथा रणस्मम्भ के पास द्रुत वेग से आ रहे थे। (वे) विकट हुंकार करते हुए चल रहे थे। (साथ ही) अपने सुयश का बखान कर रहे थे। (इस प्रकार) सुलतान के समान ही सभी निर्भय योद्धा सम्मिलित होकर युद्ध-स्थल पर पहुंचे।।50।।

तळहट्टिइ मेल्लवि तरळ तुरक्की तार ततार तुरंग।
उल्लट्टिय असपति असणिअ वायरि सायर वेलि-तरंग।
हल-हल विगरी-विगरी बोलंतिअ नीर लहरि छिल्लंत।
रण कंदळि कळह करइ किलवायण कायर नर रेलंत।।51।।

---

49 सहीय, करिइ, रवद्द, हसमस हास करिइ।

50 शीर्षक नहीं दिया गया है। सीरबचा बंगालीय, मुहा, अडर सिहर, तरवरीय, हकारवि विक्क, चल्लिय, बुल्लवि, सरिसु सवाहीय।

51 तलट्टिय भेळवि, तुरक्कीय, ऊलट्टिय, वायर, तरन्त। बोलन्तीय, कन्दळ, करिइ।

ईडर की तलहट्टी में भिड़ने के लिए बादशाह के (सेनापति) तुरकी, तार और तत्तार देश के चंचल घोड़ों को लेकर वायु में उत्पन्न विद्युत एवं सागर में उत्पन्न तरंगों के समान उलट पड़े। (उस समय) हल-हल तथा बिगरी-बिगरी बोलते हुए (यवन) समुद्रीय तरंग के समान सुशोभित हो रहे थे। युद्ध-भूमि में (उनके) युद्ध को देख कर कायर मनुष्य (उसमें) बह जाते थे। अर्थात् युद्ध-विमुख होकर भाग जाते थे।।51।।

हेखारवि हयमर हसमसि खुररवि असणि किपाण कसंत।
उद्धसवि कसाकसिअ सितर विसि धसमसि धरणि धसंत।
भू-मंडळि भड़ कमधज भड़ोहड़ि भुजबळि भिड़स भिड़ंत।
रणमल्ल रणाकुल रणि रोसारुण मुणसत्तणि तु वरंत।।52।।

(रणमल्ल की) अश्व-सैन्य के अश्वों की हसमस, पदचाप, और सत्तरवीसी (योद्धाओं) के वज्रतुल्य तलवार एवं कमरपट्ट कसने की धसमस से पृथ्वी धंस रही थी। पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ वीर राठौर अपने चापल्यपूर्ण भुजबल से (यवन) योद्धाओं से भिड़ रहे थे। रण के लिए व्याकुल और रोष से संतप्त योद्धाओं को (उस युद्ध में) अप्सराएं वरण कर रही थीं।।52।।

उल्लाळवि झालवि जुज्झ कमालह लथबथि लोथि लड़ंत।
धारुक्कट धारि धगड़ धर धसमसि धसमसि धुब्ब पडंत।
कमधज्ज उदयगिरि मंडण सविता झलमल मल्ल भिडंत।
धुरि धसि धसि धूंस धरइ धगड़ायणि धर वरि रुंड रळंत।।53।।

रुण्डों के परस्पर लड़ते हुए और वेग के साथ परस्पर पकड़ने की क्रिया से युद्ध में आश्चर्य उत्पन्न होगया। शस्त्र-प्रहार से कट-कट कर पृथ्वी पर गिरते हुए यवनों की धसमस-धसमस ध्वनि हो रही है। उदयाचल को सुशोभित करने वाले सूर्य की तरह प्रकाशमान राठौर योद्धा भिड़ रहे हैं। (वे) सर्वप्रथम (अपने) नक्कारों पर डंका देते हैं, (तत्पश्चात् आक्रमण करके) यवनों के रुण्डों को धूलि में मिला देते हैं।।53।।

।। चुप्पइ ।।

वर कमधज्ज वीर शासन छळि,
कित्ति फुरइ नव खंडि धरा तळि।

---

52 खुररवि, हसमिसि, धसणि, नर-नर वसि, भड़ रणमल्ल भिड़स मिळन्त, तरवन्त।

53 झुझ, लथि बथि, पड़न्त, धार धसमिसि धसमिसि, कमधज झलहल, भिड़न्त, धरि धरि धरि धूंस धरि धगड़ाण।

असपति सरिसु इक्क ईडरवइ,
रणि रणमल्ल मूंछ मुंहि मुखई।।54।।

श्रेष्ठ राठौर (रणमल्ल) की कीर्ति, वीर-शासन के लिए पृथ्वी के नवखंडों में प्रसारित हो रही है। (इस समय) बादशाह के समक्ष युद्ध में मात्र एक ईडराधिपति (रणमल्ल) ही (अपनी) मूंछों पर ताव दे सकता है। अर्थात् सुलतान के समक्ष लड़ने का रणमल्ल को छोड़ कर अन्य किसी भी राजा का साहस ही नहीं होता है।।54।।

असुर अभंग अंग ईडर तळि,
असपति दळ कोलाहल संभळि।
बंभण बाळ सुरहि अबला छळि,
हठि उठिउ कमधज भुजाबळि।।55।।

ईडर की तलहट्टी में सुलतान के अभंग यवन सैनिकों का कोलाहल सुनकर ब्राह्मण, बालक, गायों और स्त्रियों की रक्षार्थ बाहुबली कमधज (रणमल्ल) उठा।।55।

पक्खरि पंडरवेस भिडंतु,
धसि धगड़ायण धूंस धरंतु।
हणि-हणि मुणसिम भणई असंभम,
ताल मिलिउ हरि जंभ तणउ जिम।।56।।

(वह) कवचित यवनों से भिड़ता हुआ अथवा कवचित घोड़े को भीड़ता हुआ और अपने नवकारों पर डंका देता हुआ, यवन सैन्य में प्रविष्ट हुआ तथा मारो-मारो कहता हुआ एवं शंभू-शंभू उच्चारण करता हुआ, जिस प्रकार भगवान जंभासुर से भिड़े थे, (उसी प्रकार) ईडर की तलहट्टी में (यवन-सैन्य) भिड़ गया।।56।।

दुज्जण रुक्ख इक्क दावानळ हयमर, हठि हेड़वि कोलाहळि।
रणवाउलु रणमल्ल रणाकुल, असि रसि गाह करइ गोरी दळि।।57।।

रणोन्मत्त एवं रणाकुल (अपने) दावानल रूपी घोड़े को शत्रुओं की ओर चला

---

54 शीर्षक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है। वर हंमीर वीर, फुरिइ, खण्ड, ईडरवि, मुंछ निरखिइ।

55 अबल सुरही, कमधज।

56 पखर, धुंस, हणि हणि भणि मुणस, मिल्यु हरि बंभ तणु।

57 दुज्जण भुज्ज इक्क, कोलाहल, करिइ।

कर कोलाहल उत्पन्न करता हुआ तलवार से यवन-सैन्य को नष्ट करने लगा।।57।।

।। दुमिला ।।

गोरी दळ गाहवि दिट्ठ दहु द्दिसि गढि मढि गि़रि गह्वरि गड़ियं।
हण-हणि हक्कंतउ हुं हुं हय हय हुंकारवि हयमरि चड़ियं।
धड़हड़ तउ धड़ि कमधज्ज धरातळि धसि धगड़ायण धूंस धरइ।
ईडरवइ पंडरवेस सरिसु रणि रामायण रणमल्ल करइ।।58।।

सभी ओर यवन-सैनिकों द्वारा नष्ट किए हुए गढ़, मठ एवं पर्वतों के अन्दर स्थित गढियों को देख कर रणमल्ल (अपने) घोड़े पर चढा हुआ, मारो-मारो की वीर हक्क से (शत्रुओं को) ललकारने लगा। (तत्पश्चात्) नक्कारों पर डंका देते हुए तीव्र-वेग से यवन-सैन्य में प्रविष्ट हुआ और (वह) ईडराधिपति वीर रणमल्ल युद्ध में यवनों के साथ लड़ने लगा।।58।।

रोमचिय रण रसि (स) राढिऽरावण रहि रहि बल बोलंत वळि।
पक्खर वर पुट्ठि पवंगम पट्ठिय पहुतउ पह पतसाह दळि।
असि मारवि रूंब रणायरि रगड़िअ भंजइ धगड़ महा भड़या।
रणमल्ल रणंगणि मोड़ि मिळंता मेच्छायण मूंगळ मु(मि)ड़िया।।59।।

वीर रणमल्ल युद्ध से रोमांचित होता हुआ और शत्रुओं को ठहरो-ठहरो ललकारता हुआ घोड़े की पीठ पर सुंदर जीन कस कर बादशाह की सेना में पहुंचा और अपनी तलवार की मार से पर्वतोपम यवनों को मर्दित करता हुआ (उन) विशाल यवन सुभट्टों को विनष्ट करने लगा। (इस प्रकार) (उसने) युद्धस्थल पर भिड़ते ही यवन-सैन्य के गज-समूह अथवा यवनों को मर्दित करके मोड़ दिया।।59।।

मुहु उच्छळि मूछ मुहच्छवि कच्छवि भूमइ भूंछ समुच्छि लिया।
उल्लाळवि खग्ग करग्गि निरग्गळ गणइ-तिणइ दळ अग्गलआ।
प्रल्लयकरि लसकरि लोहि छबच्छब छंट करइ छत्तीस छळि।
रणमल्ल रणंगणि राउत विलसइ रवितळि खित्तिय रोस बळि।।60।।

---

58 शीर्षक नहीं दिया गया है। दह द्दिसि गढि गुहि गढिम् गहिय, हणि हणि हक्कन्तु, धड़कन्तु, धड़हड़तु धड़ि हम्मीर धुंसि धरिइ, करिइ।

59 रोमांच्चीय रण रसि रव रढि रावण, बोलन्त बळे, पखरव, पुहुतु, दळे, मरि रवि, रणायर रगड़य भंज्जिइ, महा लड़या मेछायण मोगर।

60 मुंछ छळिमुंछ मृदु छवि कछवि भ्रुंछरि मुंछ समुं छलया, गणि तमिङ्गळ अग्गलया, लय लय करि, लोह छब छबछञ्छट करिइ छत्रीस छले, विलसिइ, रोसवसे।

(वह रणमल्ल) पुनः उछलकर (शत्रुओं की) मुखशोभा-स्वरूप मूंछों को काटता हुआ (स्वयं) अपनी मूंछों को (संवारी हुई) लिए घूम रहा है। (उसके) खड्ग-प्रहार से हाथ कटे हुए (शत्रु) सेना के अग्रभाग में (पीड़ा से) कराह रहे हैं। (इस प्रकार) राउत रणमल्ल छत्तीस कुल के क्षत्रियों की रक्षार्थ युद्धस्थल की प्रलयकारी सेना में (भारी) रक्त की वर्षा करता हुआ, (इस) सूर्य के नीचे, पृथ्वीतल पर अपने बल से विलसता है।।60।।

सींचाणउ रा कमधज्ज निरग्गळ झड़पइ चड़वड़ धगड़ चिड़ा।
भड़हड़ करि सत्तिरिसहसभड़कइकमधजभुजझ(भ)ड़वायभ(झ)ड़ा।
खत्ति तणि खय करि खक्खर खूंदिय खान मान खंडत हुया।
रणमल्ल भयंकर वीर विडारण टोडरमलि टोडर जडिया।।61।।

कमधज राव रणमल्ल रूपी बाज की काटने वाली झड़प से यवन रूपी चटकों में खुसर-पुसर हो रही है। (वे) सतरह सहस्त्र यवन, कमधज वीर के बाहुबल रूपी झड़ी से झड़हड़ करते हुए चौंक उठते हैं। (इस प्रकार) पृथ्वी के क्षयकारी यवनों के विनष्ट हो जाने पर खान का गर्व खंडित होगया और भयंकर वीरों को तितर-बितर करने वाले वीर-शिरोमणि रणमल्ल ने (अनेक) योद्धाओं को नष्ट कर दिया।।61।।

।। चुप्पइ ।।

सोनगिरउ कन्हड़ सिम्भरवइ,
वेढि करि गज्जणवइ असुरइ।
दहु दिसि दुज्जण दळ दावट्टिय,
सोमनाथ वड हत्थइ झट्टिय।।62।।

सोनगिरा चौहान कन्हड़देव ने गजनीपति यवन के साथ युद्ध करके सभी ओर के शत्रु-सैन्य को नष्ट करते हुए सोमनाथ की मूर्ति को अपने सबल हाथों से छीन लिया था।।62।।

आदर करि संकर थिर थप्पिय,
अचळ राज चहुआण समप्पिय।

---

61 सीचाणु , झड़पिइ, भड़क्कीइ, खत्त त्तणि हयमर फाररवि खूंदीय खानमान खूंदति हया, विडारीय, टोडरमल्ल।

62 शीर्षक पर चुप्पइ नहीं दिया गया है। सोनगिरौ संतल सिंभरविइ, वेगि करि असुरह गज्जणविइ, दहदिसि, दावट्टी, चौथा चरण है ही नहीं।

असपति सरिसु साह सिम बक्कइ,
मुरट मान रणमल्ल न मुक्कइ।।63।।

(तत्पश्चात् कान्हड़देव ने) आदर के साथ उस) शंकर की मूर्ति को पुनः प्रतिष्ठित किया। (भगवान शंकर ने इस कार्य से प्रसन्न होकर) चौहानों को अचल राज्य समर्पित किया। बादशाह से साह सिम कहने लगा-(सोनगिरा कान्हड़देव की तरह की) रणमल्ल भी स्वाभिमान एवं मर्यादा का परित्याग नहीं कर सकता है।।63।।

मरड़ी मूछ वडी मुहि मंडइ,
मेच्छ सरिसु गह गाह न छंडइ।
कसवइ काळ किवाण करट्ठिय,
जां रणमल्ल रोस वसि उट्ठिय।।64।।

(उसका) मुंह मरोड़ी हुई मूंछों से सुशोभित हो रहा है। (वह) यवनों से बैर का परित्याग नहीं कर सकता। जब (रणमल्ल) रोषवश (युद्ध के लिये) उठता है (तब वह ऐसा प्रतीत होता है), (मानो) यमराज (अपने) हाथ में कृपाण धारण किए हों।।64।।

पंडरवेस डरइ समरि बाहुब्बळि,
खग्ग ताल जिम तोलइ करतळि।
ढुज्जउ दंड दुदंभ दुहंडइ,
इक्क अनेकि मलिक्क विहंडइ।।65।।

रणमल्ल जिस प्रकार युद्ध-स्थल में करगत करबाल को तोलता है, (उस) बाहुबल के स्मरणमात्र से यवन भयभीत होने लगते हैं। (वह) दंड का द्वितीय रूप है तथा दुर्दम्य (शत्रुओं को) दंडित करके छोड़ता है। (वह) अकेला ही अनेक मलिकों को नष्ट कर देता है।।65।।

॥ भुजंगप्रयात ॥

जि बुंबाअ बुंबा उलक्कि सलक्कि,
जि बक्कि बहक्कि लहक्कि चमक्कि।

---

63 राज कमधज्ज, बुक्किइ, मूंकइ।

64 मुरड़ि मुंछ मुहवडी चड़ि मण्डीय, मेछ सरिसु ढोह नवि छंडिइ, कसबे, करट्ठीय, जोउ उट्ठीय।

65 डरहि, खड्ग ताल तोलिइ यम हाथळि, उडुण्डिभ दूझ दुदम्भ दुहडिइ, एक अनेक, विहण्डिइ।

जि चंगी तुरंगी तरंगि चड़ंता,
रणमल्ल दिट्ठेण दीनं दड़ंता।।66।।

(उसके भय से) जो नक्कारची हैं, (उनके) नक्कारे फिसल कर गिर पड़ते हैं, जो बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, वे लहक मात्र से बहक जाते हैं और जो यवन सुन्दर तथा अच्छे घोड़ों पर चढ़ते थे (वे) रणमल्ल को देख कर (पैदल ही) नौ-दो-ग्यारह हो जाते हैं।।66।।

जि मुद्दास मुद्दा सदा रुद्द सद्दा,
जि बुंबाळ चुंबाळ बंगाळ बंदा।
जि झुज्झार तुक्खार कम्माल मुक्कि,
रणमल्ल दिट्ठेण ते ठाम चुक्कि।।67।।

जो उदास, प्रसन्न चित्त और हमेशा रोनी आवाज वाले, नक्कारबंद, चंबल और बंगाल निवासी यवन योद्धा हैं, (वे सभी) रणमल्ल को देखते ही तलवार एवं घोड़ों को छोड़ देते हैं और स्थान-भ्रष्ट हो जाते हैं।।67।।

जि रुक्का मलिक्का बलक्का कपाड़ी,
जि जुद्धा मुडुद्धा सनद्धा भजाड़ी।
तिभू आ खांडीआ घड़ी दंड किज्जि,
रणमल्ल दिट्ठि मुंहि घास लिज्जि।।68।।

जा अय्यार, मलिक, बलख देश के, कापड़ी (इत्यादि यवन हैं), जो युद्ध में मुर्दों को भी भगा देते हैं, जिन्होंने घड़ियाल के डंडे के समान चोट करके तीनों भवनों को (अर्थात् सभी को) वशीभूत कर लिया है, वे सभी यवन रणमल्ल को देखते ही मुंह में घास ले लेते हैं।।68।।

जि बक्का अरक्का सरक्का बहंता,
जि सब्बा सगब्बा झरब्बा सहंता।

---

66 जि बुंबे अ लंबे उलक्के सलिक्किइ, जि बक्के बहक्के लहिक्के चमुक्किइ, जि चंगे तुरंगे तरंगे चढन्ता, रणमल्ल, मुड़न्ता।

67 यमुद्दा, बम्बाल, झुझार, तुखार, मुक्किइ, ठामचुक्किइ।

68 रक्का, कि बुब्भा पहल्ला सनद्ध विभाडिइ, ति आखंडी भूदण्डि बहु खडि किज्जिइ, रणमल्ल दिट्ठे मुहे घास घल्लिइ।

जि जुज्झार उज्जार हज्जार चल्लि,
रणमल्ल दिट्ठि मुंहि घास घल्लि।।69।।

जिनके वचन तीक्ष्ण शर के समान चलते थे। जो सभी सगर्व प्रहारों को सहते थे। जो योद्धा हजारों लोगों को उजाड़ में चलने के लिए (विवश) कर देते थे, (वे स्वयं) रणमल्ल को देख कर मुंह में घास दबा लेते हैं।।69।।

।। छप्पय ।।

हिव किरमाळ पहारि धारगढ गाहवि छंडू।
कस बेकड़ी किवाण पट्टि किलवायण खंडूं।
भुजबलि भल्लइ भिड़िअ भरी भय भरुयचि पइसूं।
धरीअ खंभाइच्च असुर सिर चंपवि बइसूं।
प्रह ऊगमि पट्टणि पट्ट करि, धगड़ायण धंधळि धरूं।
ईडरवह रा रणमल्ल कहि, इक्क छत्त रवि तळि करूं।।70।।

ईडराधिपति राव रणमल्ल कहता है कि-(मैं) अपने असिप्रहार से धारगढ़ के (यवनों को) नष्ट करके छोड़ूंगा। कवच और कृपाण बांध कर मुगलों के शासन को स्ववश कर लूंगा। हस्तगत भाले से भिड़ कर (यवनों में) भय का संचार करता हुआ भरोंच में प्रवेश करूंगा। खम्भाइच के यवन को अपने अधिकार में करके (उस) असुर के मस्तक को दबा कर ही चैन लूंगा। सूर्योदय के होते-होते पट्टण को नष्ट करके (वहां की) यवन-सैन्य में धुंद मचा दूंगा। (इस प्रकार) समस्त पृथ्वी पर (अपना) एकाधिकार स्थापित कर लूंगा। अर्थात् समग्र देश से यवनों को मार कर भगा दूंगा।।70।।

---

69 बुक्का, जि सद्दा सगद्दा जरद्दा सहन्ता, जि झझार उझार हझार चल्लिइ, रणमल्ल दिट्ठै मुहे।

70 शीर्षक पर कवित्त है। पहरि, गाहवि, करि, किलबाण हूं, भल्लि भिडीय, भयभरि भरूयच्चि पिसूं, धरूं अ लम्बा छत्र, बिसूं, प्रहि, धूंधळि, इडरवै, एकछत्र।

शब्द-कोष

अ

अंग=सैनिक

अंगोअंगी=परस्पर

अंबर पुड़ तळि=आकाश में

अगर-ग्रास=शासित ग्राम

अग्गइ=आगे

अग्गलइ=आगे, अर्गला

अचल=स्थिर

अडर=निर्भय

अनेकि=बहुत

अभंग=वीर

अरक्का=आरा

अरदास=प्रार्थना

अस्सई=अश्व पर

असणि=वज्र

असणिअ=वज्रस्वरूप

असपति=बादशाह

असलीइ=विशुद्ध (खास)

असिरसि=तलवार से

असुर=यवन

असुहउ=अशुभ

अहंग=युद्ध में, हमारे?

आ

आंण=आया, आज्ञा

आ=इन्होंने

आदर=सत्कार

आपूं=दूं

आलमि=संसार में

इ

इक्क=एकाकी

इकछत=एकाधिकार

इम=इस प्रकार

उ

उज्जार=बिना मार्ग के

उध्रसइ=आगे बढ़ रही थी

उरि=हृदय

उलक्कि-सलक्कि=फिसल कर गिर पड़ना

ऐ

ऐयार=गुप्तचर, बहुत बड़ा धूर्त और चालाक

क

कंध=स्कंध

कटक=सेना

कठोर=निष्ठुर

कन्हड़=कान्हड़ देव सोनगिरा

कमधज=राठौर
कमल=मस्तक, पुष्प
कम्माणियां=धनुष
कम्माल=तलवार, आश्चर्य
कम्मालह=मस्तक, आश्चर्य
कर=हाथ
करग्गि=हाथ
करतलि=हाथ में
करि=हाथ में, करके
कलरवि=ध्वनि से
कस=बांध कर
कसी=कमरबंद
कायर=डरपोक
काहल=एक युद्ध वाद्य
कित्ति=कीर्ति
किद्धउ-किया
किपाण=तलवार
किवाण=तलवार
किमइ=किसी भी प्रकार
किरमाल=तलवार
किलवायण=यवन सेना
कुमल=कोमल
कोस=खजाना
कोडि=प्रत्यंचा

ख

खंति=लग्नपूर्वक
खक्खर=यवन
खग्ग=तलवार
खांडिया=वशीभूत कर लिए
खिजमत्ती=सेवा
खित्ती=पृथ्वी
खित्तीय=पृथ्वी पर
खुंदाळम=वीर, बादशाह
खुद=स्वयं

ग

गज्जणवइ=गजनीपति
गढ़ि=गढ़
गय=हाथी, ऊंट
गयणंगणि=आकाश
गह=समय, स्थान
गहगाह=वैर
गहिर=गंभीर
गाम=ग्राम
गायु=पछाड़ा, मर्दन किया
गाह करइ=नष्ट करता है
गाहवि=नष्ट किए हुए
गुज्जार=प्रार्थना
गुण=धनुष की डोरी
गेह=घर
गौरीदळि=यवन सेना

घ

घणुं=बहुत
घल्लि=नष्ट करो

च

चंगि=अच्छे
चंचलि=घोड़े पर
चंपई=दबाता
चंपिसि=दबाया जायेगा
चउ=की
चमक्कि=चमस्कृत करता हुआ, भयभीत
चल्लावि=भेजा

चास=पृथ्वी
चिड़ा=चटक, गोरैया
चिहूं=चारों
चुक्कि=चूक जाते हैं

छ

छलि=के लिए, युद्ध

ज

जइ=जाकर
जड़िया=नष्ट किया
जरद्द=कवच
जळहर=मेघ
जव=जब
जां=जबतक, जब
जि=जो, जिनके
जिम=जिस प्रकार, जैसे
जुद्धा=युद्ध में

झ

झट्टिय=छीन लिया
झड़पई=झपाटे से
झड़ा=प्रहार से
झरब्बा=प्रहार
झाळ=लपट
झुज्झार=योद्धा
झुझ=युद्ध

ट

टोडर=वीर
टोडरमलि=वीर-शिरोमणि

ठ

ठाम=स्थान

ड

डहलिय=घेरा

ढ

ढोली=एक गायक जाति

त

तणि=शक्ति, की
तणुं=का
तत्तार=एक यवन देश
तरंगि=चंचळ
तरणी=सूर्य
तरतर=शीघ्रता से
तरल=चंचल
तरवर=शीघ्रता से
तळ=तले की
तलि=तलहटी में
तां=तब तक
तार=एक यवन देश
तिक्ख=तीखे, बढ़िया
तिम=उसी प्रकार
तु=तुम्हें, तुम्हारी
तुक्खार=घोड़ा
तुरंगी=घोड़ों पर
ते=वे
तेजी=घोड़ा
तोलंत=परीक्षा करता हुआ
तोलई=जांचता था
त्रण=तीन

थ

थप्पिय=स्थापित किया
थाट=समूह
थिर=स्थिर

द

दड़वड़=एक युद्ध-वाद्य

दळ=सेना
दहु दिसि=दसों दिशाओं में
दाम=धन
दारुण=भयंकर
दावट्टिय=नष्ट करके
दास=सेवक
दिद्ध=दिया
दिद्धउ=दिया
दिसि=दिशाओं में
दुज्जउ=दुर्जयं
दुज्जण=शत्रु
दुज्जण दळ=शत्रुओं की सेना
दुद्दंभ=दुर्दमनीय
दुहंडइ=दंडित करता है, घुमाता है
दुहुदिसि=दोनों दिशाओं में

ध

धंधळि=धुंध
धगड़=यवन
धगड़ायण=यवन सेना
धणी=स्वामी
धर=पृथ्वी
धरणितलि=पृथ्वी पर
धरि=पकड़ कर
धरिय=पकड़ कर
धरित=घुसकर
धाड़ि=लुटेरा, आवाज, लूट
धाड़िइ=लूट करने
धान=अन्न
धायउ=चला
धायु=पकड़ा, चला
धार=युद्ध, शस्त्र
धारकरि=युद्ध करके शस्त्र चलाकर
धुब्ब=ध्वनि
धुरि=प्रथम
धुंस=नगाड़ा, नगाड़े की ध्वनि

न

नइं=तथा
नग=पहाड़
नड़ी=स्ववश कर लिया था
नयर=नगर
नह=नहीं
निकर=समूह
निब्भय=निर्भय
निरंतर=लगातार
निरग्गल=कटे हुए
निसि=रात्रि में
निहुटि=गुप्त

प

पंडरवेस=यवन, घोड़ा
पइसूं=प्रवेश करूंगा
पक्खर=अश्व कवच
पक्खरि=कवचित
पट्टकरि=नष्ट करके
पड़इ=गिरते थे, आक्रमण करते थे
पड़क्कि=नगाड़ा
पद्धरि=नष्ट करके
पय=पद, खीर (साभिप्राय)
पराण=चढ़ाई
पवंगम=घोड़े की
पसरइ=फैलते हैं
पह=राजा
पहट्टइ=चौक में

पहारि=प्रहार से
पहुत्त=पहुंचे
पासि=पास में
पुण=पुन:
पुट्ठि=पीठ पर
पुणु=पुन: कहता हूं
पेक्खिसी=देखेगा
पोक्कार=पुकार
प्रहि=प्रात:काल में
प्रह उगमि=सूर्योदय के साथ

फ

फर-फर=जल्दी-जल्दी
फरमाणियां=आज्ञाएं
फार=बहुत
फारक=ध्वजाएं, सैनिक
फुरमाण=फर्मान, आज्ञा-पत्र
फुंगराइ=यवनपति

ब

बंगरव=बांग की ध्वनि, बंगालियों की ध्वनि
बंभण=ब्राह्मण
बंदि=कैद
बंदूं=बंदगी करना
बक्कइ=पुकारते हैं, कहता है
बक्का=वचन
बक्कि=बोलने वाले
बलं=शक्ति को
बलकाक=यवन
बल्लि=स्वामी, संरक्षक
बाळ=स्त्रियां, बालक
बाहु बलि=शक्ति का
बिबहर=यवन
बुंबा=नक्कारे
बुंबाअ=नक्कारची
बुंबारव=एक युद्ध-वाद्य
बुंबळ=नक्कारे वाले
बुल्लइ=कहा, कहते हैं
बुल्लिउ=बोला
बेकड़ी=कवच

भ

भगगउ=भागा
भणइ=कहता हुआ
भरळि=ध्वनि
भल=भाला
भल्लइ=भाले से
भांण=सूर्य
भारिअ=विशाल
भिड़स=योद्धा
भींछ=वीर
भूंछ=वीर
भूरि=अत्यधिक
भेरि=भेर (वाद्य)

म

मंडइ=सुशोभित होता है
मंडि=तत्पर
मंत्र=सलाह
मक्कड़ा=बंदरों को, यवनों को
मच्छर=मात्सर्य
मढि=देवस्थान
मदभीभंळ=मद, विह्वल
मफरद्दह=अकेले, तनहा
मम=मैंने

मलिक=यवनों की अेक सम्मानजनक उपाधि, सेनापति
मल्लमौलि=वीर शिरोमणि
मान=गर्व
मिंइ=मेरे
मिळियउ=भिड़ा
मीर=बहादुर, यवन सरदार
मुक्कइ=छोड़ता है
मुग्गरि=सेना में
मुझ=मेरा
मुट्ठि दळ=थोड़ी-सी सेना
मुणसत्तणि-अप्सराएं
मुणसि=कहता था
मुद्दा=प्रसन्न
मुद्दास=उदास
मुफरद=अकेले, तनहा
मुरट-मान=स्वाभिमान
मुरवइ=मरोड़ता है
मुह=मुझ
मुहड़ाया=परास्त कर दिये
मुहि=मुंह से, मुंह, मुंह में
मुहु=पुनः
मूंगळ=मुगल, हाथी
मेच्छ=यवन
मेच्छायण=यवन सैन्य
मेछ=यवन

र

रउद्द=यवन
रउद्दह=यवनों का
रण-ताणी=युद्धभय
रणमल्ल=योद्धा
रणवाउलु=रणोन्मत्त
रणाकुळ=रण के लिए व्यग्र
रणि=युद्ध में
रत्ता=अनुरक्त होकर
रवितळ=समस्त भू-भाग में
रहमाणी=यवन
रहि=दास, सेवक
रा=राजा
राउत=राजपुत्र, एक उपाधि
राढिऽरावण=वीर
रामायण=युद्ध
रुक़्का=अय्यार, इक्का
रुक्ख=तरफ
रुद्द=रौद्र, रोने वाले
रुहिर=रुधिर
रूंब=यवन
रेणइ=धूलि से
रोसवसि=सरोष
रोहअ=आक्रमण करके, घेरा डालकर

ल

लक्खि=लाखों देखकर
लखि=लिखकर
लसकरि=सेना
लहक्कइ=झपटता है
लाखबंद=कासिद, पत्रवाहक
लोड़ि=मंथन करके
लोथि=शव
लोह=शस्त्र
लोहि=श्रोणित

व

वड़ी=से
वर=श्रेष्ठ
वळि=पुनः
वहि=चलकर
वागि=बजाकर
वाटि=मार्ग
वेगि=वेग से, शीघ्र
वेढि=युद्ध
वेलि-तरंग=लहरों के समान
विडारण=तितर-बितर करने वाला
विनड़िसु=काबू कर लूंगा
विरंग=कुरूप, यवन
विरद=सुयश
विवाद=युद्ध
विसर=बुरा
विहंडइ=भगा देता है, भ्रमित कर देता है

स

संकर=सोमनाथ महादेव
संगरइ=युद्धार्थ
संगरि=युद्ध में
संचरीय=चली
संभळि=सुनाई देती है, सन कर
सइ=सहायतार्थ
सगब्बा=सगर्व
सद्द=शब्द
सद्दा=शब्दों वाले
सदा=हमेशा
सनद्धा=तत्पर
सब्बा=सभी
समं=समान
समप्पिय=दिया
समरि=योगनियां, युद्ध में, स्मरण करके
समुहर=सेना का अग्रभाग
समुहरि=सेना के अग्रभाग में
सरक्का=शर के समान
सरणाई=शहनाई (युद्धवाद्य)
सरिस=समान
सरिसु=सक्रोध, समान
सवि=सब
सविता=सूर्य
सायर=समुद्र
सासन=राज्य
साहण=चतुर्विध-सैन्य, घोड़ा
साहणवइ=शासनाधिपति
साह=एक उपाधि, सहायता
साहस=शीघ्रता करने वाला, जल्दबाज
साहसिक्क=अत्याचारी
साहसी=चपल
सिम्भरवइ=चौहान (एक क्षत्रिय जाति
सिक्खा=शिक्षा
सिरि=सिर पर, ऊपर
सिल्लार=योद्धा
सिल्लारह=वीरों की
सिहरि=शिखर, सिरा, पहाड़ों के
सिहूली=आर्तनाद
सींगणी=धनुष
सींचाणउ=बाज पक्षी
सपुयं=शासक को
सुर=स्वर, ध्वनि

सुरहिं=गायों का

सुहड़=सुभट्ट

ह

हक्कारिअ=संबोधन करके, बुला कर

हत्थइ=हाथों से

हय=घोड़ा

हयखुर=अश्वपद

हयमर=घोड़ा

हयमर फोज=अश्व सैन्य

हयमरि=घोड़े पर

हराम=नष्ट

हरि=हरण कर लिया

हलाल=स्वीकार्य

हसि=हंसकर

हाल-माल-दीवाणी=हुकूमत

हिव=अब, अभी

हुसियार=सावधान

हेड़वि=हांक कर

हेजब=दूत

हेलां=पुकार करके

हैराण=चकित

□□□

₹ 75.00